खबर पेज 8 पर

गंभीर समाचार

समय–समाज–संस्कृति

खबर पेज 8 पर

वर्ष -11 अंक–15 पाक्षिक समाचार पत्रिका कोलकाता, बृहस्पतिवार 16 – 31 अक्टूबर 2025 मूल्यः 5 रुपये RNI No.WBHIN/2014/59321, ISSN No. 2456/3005 Kolkata कुल पृष्ठ – 8

सुविचार

♦अगर आपके अंदर धैर्य है तो निश्चित ही आप ज़िन्दगी के हर कठिन से कठिन फैसले का सही निर्णय कर सकते हैं।

♦क्रोध हवा का वह झोंका है, जो बुद्धि के दीपक को बुझा देता है,जिनकी भाषा में सभ्यता होती है उनके जीवन में सदैव भव्यता होती है।

♦देख लेना ज़िन्दगी में मेहनत से मिले फल का स्वाद क़िस्मत से मिले फल के स्वाद से ज़्यादा मीठा लगेगा।

शेरो-शायरी

कोई हम-दम न रहा कोई सहारा न रहा
हम किसी के न रहे कोई हमारा न रहा।

ऐसे हँस हँस के न देखा करो सब की जानिब
लोग ऐसी ही अदाओं पे फिदा होते हैं।

देख ज़िंदाँ से परे रंग-ए-चमन जोश-ए-बहार
रक़्स करना है तो फिर पाँव की ज़ंजीर न देख।

शब-ए-इंतिज़ार की कश्मकश में न पूछ कैसे सहर हुई कभी इक चराग जला दिया कभी इक चराग बुझा दिया।

भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने रचा इतिहास

ऑस्ट्रेलिया को हराने के बाद छलक पड़े खिलाड़ियों के जज्बात

मैदान पर ही फूट-फूट कर रोईं हरमन और जेमिमा

निज संवाददाता : नवी मुंबई के डीवाई पाटिल स्टेडियम में मंगलवार रात इतिहास बन गया। भारतीय महिला टीम ने सात बार की चैंपियन ऑस्ट्रेलिया को हराकर वर्ल्ड कप फाइनल में जगह बना ली है। मैदान पर हर तरफ खुशी देखने को मिला। जब अमनजोत कौर ने 48.3 ओवर में चौका जड़ा और भारत को जीत दिलाई, तो पूरी टीम भावनात्मक हो गई। इस ऐतिहासिक जीत की असली कहानी लिखी थी जेमिमा रोड्रिग्ज और हरमनप्रीत कौर ने, जिनकी आंखों से जीत के बाद खुशी के आंसू बह रहे थे।17 चौकों को लगाकर 127 रन की नाबाद पारी खेलने वाली जेमिमा रोड्रिग्ज उस वक्त फूट-फूटकर रो पड़ीं जब भारत ने फाइनल में जगह पक्की की। डगआउट में बैठे सभी खिलाड़ियों की नजरें उन पर थी।जेमिमा ने अपनी पारी के दौरान जब शतक पूरा किया,

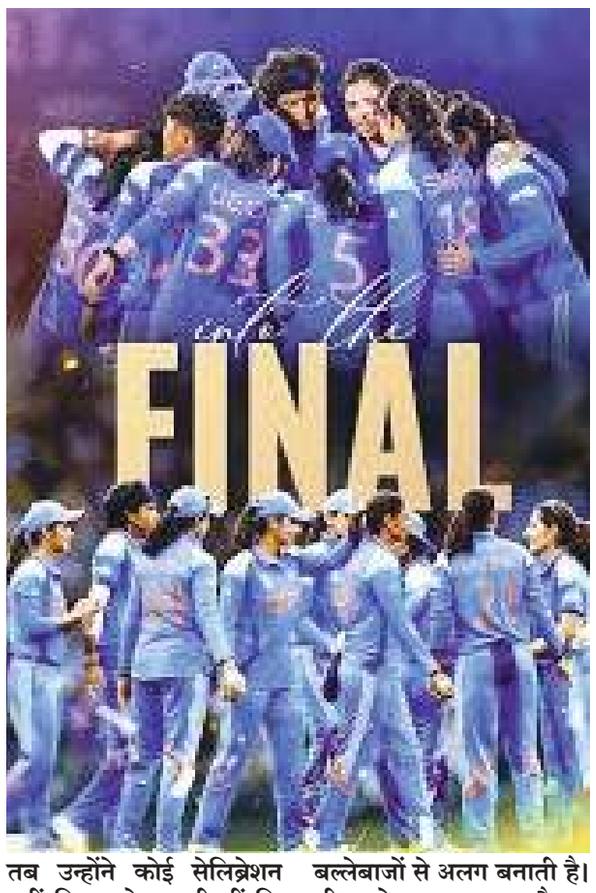

तब उन्होंने कोई सेलिब्रेशन नहीं किया। वे जानती थीं कि ''काम अभी बाकी है। यही मैच्योरिटी उन्हें बाकी बल्लेबाजों से अलग बनाती है। जीत के बाद जब कैमरा उनकी ओर गया, तो जेमिमा की आंखों में आंसू थे।भारतीय कप्तान हरमनप्रीत कौर भी इस जीत के भावनात्मक पल में खुद को रोक नही पाईं। 88 गेंदों पर 89 रन की शानदार पारी खेलने के बाद जब उन्होंने जेमिमा को गले लगाया, तो दोनों की आंखें नम थी। हरमन के लिए यह लगातार तीसरा नॉकआउट मैच था, जिसमें उन्होंने अर्धशतक लगाया। कप्तान के रूप में उन्होंने टीम को मुश्किल हालात से बाहर निकाला और आत्मविश्वास के साथ जीत तक पहुंचाया।भारत ने 339 रन के विशाल लक्ष्य का पीछा करते हुए तीसरे विकेट के लिए हरमन और जेमिमा ने 167 रन की ऐतिहासिक साझेदारी की। यह साझेदारी भारतीय महिला क्रिकेट इतिहास की सबसे बेहतरीन में से एक मानी जा रही है। वहीं, किस्मत भी भारत के साथ थी, ऑस्ट्रेलियाई फील्डरों ने दो आसान कैच छोड़े, जिसने मैच का रुख पूरी तरह बदल दिया।जब अमनजोत ने विजयी चौका लगाया, तो पूरा स्टेडियम 'इंडिया-इंडिया' के नारों से गूंज उठा। मैदान पर भारतीय खिलाड़ी एक-दूसरे से लिपटकर फूट-फूट कर रोए और दर्शक इस ऐतिहासिक जीत के गवाह बने।

दार्जिलिंग के महाकाल मंदिर में महिलाओं के लिए ड्रेस कोड लागू

छोटे कपड़े पहनकर आने पर लगी रोक मंदिर समिति के फैसले से छिड़ी नई बहस

निज संवाददाता : पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग शहर में स्थित महाकाल मंदिर में मिनी स्कर्ट या ऐसी कोई भी छोटी पोशाक पहनकर प्रवेश करने पर पाबंदी लगा दी गई है। मंदिर कमेटी द्वारा एक पोस्टर भी लगाया गया है। इसमें लिखा है कि महिलाओं को स्कर्ट पहनकर मंदिर परिसर में प्रवेश की अनुमति नहीं है।यानी मुंबई के सिद्धिविनायक मंदिर और दिल्ली के कालका जी मंदिर के बाद अब दार्जिलिंग के प्रसिद्ध महाकाल मंदिर में लड़कियों के छोटे कपड़े पहनकर आने पर रोक लगा दी गई है। मंदिर समिति ने दक्षिण भारत के मंदिरों की तर्ज पर ड्रेस कोड के इस फैसले को लागू किया गया है। समिति के इस फैसले से एक नई बहस छिड़ गई है। कुछ लोग इसे मंदिर की पवित्रता बनाए रखने के लिए बेहतर उपाय बता रहे हैं तो कुछ लोगों इस व्यक्तिगत स्वतंत्रता का हनन बता रहे हैं।पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग को 'पहाड़ों की रानी' भी कहा जाता है। यहां स्थित प्रसिद्ध महाकाल मंदिर एक नए नियम को लेकर चर्चा के केंद्र में आ गया है। मंदिर समिति ने दक्षिण भारत के कई बड़े मंदिरों में लागू व्यवस्थाओं की तरह सख्त ड्रेस कोड लागू करने का फैसला लिया है। इस नियम के तहत, अब लड़कियों और महिलाओं मंदिर में शॉर्ट्स, मिनी स्कर्ट या फिर किसी भी प्रकार के अन्य छोटे या अशोभनीय माने जाने वाले कपड़े पहनकर नहीं आ सकेंगी।दरअसल, दार्जिलिंग में साल भर बड़ी संख्या में पर्यटक आते है। विभिन्न पर्यटन स्थलों के साथ-साथ, महाकाल मंदिर भी एक पर्यटन स्थल है। प्रतिदिन बड़ी संख्या में लोग मंदिर में पूजा-अर्चना करने आते है। इस बार मंदिर में महिलाओं के लिए ड्रेस कोड लागू किया गया है। हालांकि, मंदिर में एक वैकल्पिक व्यवस्था भी की गई है। अगर कोई स्कर्ट पहनती भी है, तो मंदिर में प्रवेश के लिए एक लंबा घाघरा पहनाया जाएगा। वहीं से उन्हें वह पोशाक पहनकर मंदिर में प्रवेश करना होगा। हालांकि इस तरह के दिशा-निर्देश से श्रद्धालुओं में असंतोष है, लेकिन कई लोगों ने मंदिर अधिकारियों की इस पहल की सराहना की है।मंदिर समिति के जिम्मेदारों ने बताया कि उन्होंने यह फैसला काफी विचार-विमर्श के बाद लिया है। दरअसल, छोटे कपड़े पहनकर आने से मंदिर का वातावरण खराब हो रहा था। इसी को देखते हुए उन्होंने इसी हफ्ते से मंदिर में नया ड्रेस कोड लागू किया है। एक तरफ कुछ लोग इसे जरूरी तो कुछ इसे पर्सनल आजादी पर खतरा बता रहे हैं।गौरतलब है कि इससे पहले भी कई मंदिर में यह व्यवस्था लागू है, जहां महिलाओं और युवतियों के छोटे और अशोभनीय कपड़े पहनकर आने पर रोक है। ऐसे ही मंदिरों की तर्ज दार्जिलिंग के महाकाल मंदिर में नई ड्रेस कोड व्यवस्था लागू की गई है। अब देखने ये होगा कि मंदिर समिति कैसे इस व्यवस्था को सुचारू से जारी रखती और इस दौरान उन्हें क्या-क्या परेशानियों का सामना करना पड़ता है।दार्जिलिंग महाकाल मंदिर का इतिहासस्थानीय रिकॉर्ड के अनुसार, दार्जिलिंग नाम की उत्पत्ति का स्रोत, 1765 में लामा डोर्टेय रिंजिंग ने इस पवित्र स्थल पर पहला मठ बनाया था, जिसे डोर्टेय-लिंग मठ के नाम से जाना जाता था। इससे पहले, यह पहाड़ी स्वदेशी लेप्चा लोगों के लिए एक पवित्र स्थान माना जाता था। गज़मेर ने बताया कि 1782 में, लामा डोर्टेय रिंजिंग ने मंदिर का पुनर्निर्माण किया, जिसे आज महाकाल मंदिर के नाम से जाना जाता है। हालांकि, लगभग 1788 में गोरखा आक्रमण के बाद, मूल मठ नष्ट हो गया था। समय के साथ, यह स्थल हिंदू प्रतीकों और पूजा पद्धतियों को दर्शाने लगा, खासकर नेपाली समुदाय के बीच काफी लोकप्रिय हो गया।

बिहार की सियासत में नए समीकरण गढ़ने में लगे हैं प्रशांत किशोर

पिता नहीं चाहते थे बेटा राजनीति में आएं

निज संवाददाता : बिहार स्थित सासाराम के पास स्थित कोनार गांव आज जनसुराज पार्टी के संस्थापक प्रशांत किशोर के नाम से जाना जाता है। लेकिन गांव के बुजुर्ग अब भी डॉक्टर साहब का बेटा कहकर उन्हें पहचानते हैं। प्रशांत किशोर कि पिता डॉ. श्रीकांत पांडे की सादगी, सेवा भावना और बुद्धिमत्ता ने दशकों तक इलाके के लोगों को प्रभावित किया।डॉ. श्रीकांत पांडे का निधन 2019 में दिल्ली में हुआ। वे दस सालों तक स्ट्रोक से जूझते रहे। उनकी पत्नी इंदिरा पांडे जो गृहिणी थीं, उनका निधन 2017 में हो गया था।मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, डॉ. श्रीकांत पांडे पेशे से चिकित्सक थे और उन्होंने पटना मेडिकल

कॉलेज (पीएमसीएच) से चिकित्सा की पढ़ाई की थी। आगे की पढ़ाई उन्होंने कोलकाता से इंटरनल मेडिसिन में की। वे सिर्फ डॉक्टर नहीं, बल्कि लोगों के जीवन का सहारा थे। जब भी कोनार गांव लौटते, घर के बाहर मरीजों की भीड़ लग जाती थी। वह बिना भेदभाव हर वर्ग के लोगों का इलाज करते थे-चाहे अमीर हो या गरीब, कोई उनके दरवाजे से खाली हाथ नहीं लौटता था। गांव के लोग बताते हैं कि डॉ. साहब सुबह तब तक नाश्ता नहीं करते थे जब तक मरीजों को देख न लें।प्रशांत किशोर के चाचा बलिराम पांडे बताते हैं कि भैया डॉ. श्रीकांत पांडे में जरा भी अहंकार नहीं था, जबकि वह बेहद मेधावी थे। वे गांधी और नेहरू की विचारधारा से गहराई से प्रभावित थे। राजनीति के शोर-शराबे से उन्हें हमेशा दूरी रही। प्रशांत के पिता नहीं चाहते थे कि उनका बेटा राजनीति में आए। जब प्रशांत दक्षिण अफ्रीका में संयुक्त राष्ट्र (यूएन) में काम कर रहे थे, तब उनके पिता को लगा था कि बेटे ने जीवन में सही दिशा चुन ली है। लेकिन 2014 में जब प्रशांत नरेंद्र मोदी के चुनावी कैंपेन से जुड़े, तो पिता श्रीकांत पांडे असहमत थे। बलिराम पांडे बताते हैं कि भैया ने कभी राजनीति को पसंद नहीं किया। परिवार को लगा था कि प्रशांत को राजनीति में नहीं जाना चाहिए, पर अब वो पूरी तरह राजनीति में हैं और बिहार विधानसभा 2025 का चुनाव पूरी जिम्मेदारी से लड़ रहा है।आज जब प्रशांत किशोर जनसुराज पार्टी के साथ बिहार की सियासत में नए समीकरण गढ़ने में लगे हैं, तो उनके पिता की शिक्षाएं और आदर्श अब भी उनकी दिशा तय करते दिखते हैं। प्रशांत किशोर इस बार बिहार विधानसभा चुनाव में जनसुराज पार्टी को मजबूत विकल्प बनाने की रणनीति पर काम कर रहे हैं। उनका फोकस गांव-गांव जाकर जनता से संवाद और स्थानीय मुद्दों को केंद्र में रखने पर है।बलिराम पांडे अब अपने भतीजे पर गर्व करते हैं और कहते हैं अब मैं प्रशांत का प्रशंसक हूं। वह जो कर रहे हैं, वो बिहार के लिए अच्छा है। भैया (डॉ. साहब) शायद राजनीति से असहमत रहे हों, लेकिन प्रशांत के भीतर सेवा और ईमानदारी की वही भावना है जो उनमें थी। डॉ. श्रीकांत पांडे अब नहीं हैं, लेकिन उनका आदर्श और नाम आज भी कोनार गांव की पहचान है और उनका बेटा प्रशांत किशोर उसी विरासत को एक नई दिशा देने की कोशिश में है।

अब शहरी इलाकों की सड़कों पर नहीं होंगे लटकते बिजली के तार

सीएम ममता बनर्जी के आदेश पर अंडरग्राउंड होगी बिजली

निज संवाददाता : टूटे हुए तार, खुले बिजली के खंभे और लगातार लटकते तार अक्सर खतरा पैदा करते हैं। इन सबको खत्म करने के लिए बंगाल सरकार ने बड़ा कदम उठाया है। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के निर्देश पर कोलकाता समेत राज्य की अलग-अलग नगर पालिकाओं में बिजली सप्लाई सिस्टम को अंडरग्राउंड करने का प्लान शुरू किया गया है। हाल ही में चंदननगर में राज्य के बिजली विभाग की पहल पर इस नए अंडरग्राउंड इलेक्ट्रिक सप्लाई सिस्टम का उद्घाटन खुद मुख्यमंत्री ने किया।वहीं, कोलकाता के पोस्ता में एक कार्यक्रम में शामिल होने के दौरान मुख्यमंत्री ने कहा कि यह व्यवस्था पूरे कोलकाता और सभी नगर पालिकाओं में होनी चाहिए। सड़कों पर इतने सारे तार लटके हुए हैं! एक मीटिंग बुलानी चाहिए और सभी को इसकी जिम्मेदारी लेनी चाहिए। सिर्फ तारों को अंडरग्राउंड किया जाना चाहिए। सब कुछ एक पाइप में जाएगा। प्रशासनिक सूत्रों के मुताबिक, उनके निर्देश पर राज्य के शहरी विकास विभाग ने तैयारी शुरू कर दी है। इस प्रोजेक्ट का पहला इम्प्लीमेंटेशन चंदननगर में हुआ। सिर्फ़ ढाई साल में 150 किमी से ज़्यादा सड़कों से 450 किमी ओवरहेड केबल हटाए गए हैं। करीब 500 बिजली के खंभे हटाए गए हैं। पूरे काम पर राज्य सरकार ने करीब 120 करोड़ रुपये खर्च किए हैं। जानकारों के मुताबिक, अगर अंडरग्राउंड केबल सिस्टम शुरू हो जाता है, तो बिजली जाने, शॉर्ट सर्किट और आग लगने की संभावना बहुत कम हो जाएगी।

हार्ट अटैक आने पर कैसे दें सीपीआर?

उच्च माध्यमिक स्कूलों के सिलेबस में जोड़े जा रहे हैं नए पाठ

निज संवाददाता : ज़्यादातर मामलों में हार्ट अटैक अचानक ही आता है। उस समय, कार्डियोपल्मोनरी रिससिटेशन या सीपीआर ही जान बचाने का एकमात्र तरीका बन जाता है। हालांकि, समस्या यह है कि सीपीआर की थ्योरेटिकल जानकारी होने और इसे प्रैक्टिस में लागू करने की क्षमता में बहुत बड़ा अंतर है। उस अंतर को कम करने के लिए हायर सेकेंडरी (उच्च माध्यमिक) हेल्थ और फिजिकल एजुकेशन के सिलेबस में सीपीआर और दूसरे जान बचाने वाले सब्जेक्ट्स के लेसन शामिल किए जा रहे हैं।अगर खाना सांस की नली में फंस जाए या कोई पानी में डूब जाए, तो उस खाने या पानी को कैसे निकाला जाए और दिल को काम करता रहे। वह तरीका भी तीसरे

सेमेस्टर के सिलेबस में शामिल किया गया है। मौजूदा रिपोर्ट के अनुसार, टीचर्स का कहना है कि सिर्फ किताबें पढ़कर नहीं, बल्कि प्रैक्टिकल एजुकेशन सबसे असरदार होती है। ऐसे कई लोग हैं जो सीपीआर वर्कशॉप में सीखी गई तकनीक का इस्तेमाल करके कई जानें बचा पाए हैं। सिलेबस बनाने वालों ने कहा कि सीपीआर का बेसिक कॉन्सेप्ट आठवीं क्लास में भी है। लेकिन आठवीं क्लास के छात्र के लिए इसे असरदार तरीके से लागू करना मुश्किल है, इसलिए इसे हायर सेकेंडरी में डिटेल में शामिल किया गया है। करिकुलम के मुताबिक, अगर कोई बेहोश हो जाए, तो सबसे पहले गर्दन के किनारे कैरोटिड आर्टरी को दबाकर देखें कि हार्ट एक्टिव है या नहीं। अगर यह एक्टिव है, तो हल्के से धक्का देकर होश में लाने की कोशिश करें। अगर इससे काम न बने, तो पीड़ित को पीठ के बल लिटा देना चाहिए और मुंह में फंसी कोई भी चीज़ जल्दी से निकाल देनी चाहिए। फिर, दो उंगलियों से दोनों पसलियों के जंक्शन के नीचे हथेली के सख्त हिस्से को दबाकर हार्ट को एक्टिवेट करना चाहिए। छात्रों को सिखाया जाएगा कि इस प्रेशर तक पहुंचने के लिए दोनों हाथों का एक साथ एक मिनट में 100 बार इस्तेमाल करें। अगर ज़रूरी हो, तो नाक से मुंह तक टेक्निक इस्तेमाल करने के नियम भी सिखाए जाएंगे। यह तरीका बच्चों में खास तौर पर असरदार है।हायर सेकेंडरी में सीपीआर के साथ हीम्लिच मेथड भी सिखाया जाएगा। जब खाना सांस की नली में फंस जाता है तो बोलना बंद हो जाता है। पीड़ित हीम्लिच साइन देकर प्रॉब्लम बता सकता है। छात्र सीखेंगे कि पीड़ित को पीछे से लपेटकर और उसके पेट को पांच बार दबाकर खाना बाहर निकाला जा सकता है। पीठ पर जोर से दबाने की टेक्निक बच्चों में इस्तेमाल होती है। इस नए सिलेबस में बदलाव से छात्रों को जान बचाने वाली टेक्नीक खुद सीखने का मौका मिलेगा।

> बाक्ससीपीआर या कार्डियोपल्मोनरी रिससिटेशन, एक जान बचाने वाला इमरजेंसी प्रोसीजर है जो तब किया जाता है जब किसी की सांस या दिल की धड़कन रुक गई हो। इसमें छाती को दबाने और बचाव के लिए सांस लेने का कॉम्बिनेशन होता है ताकि प्रोफेशनल मेडिकल मदद आने तक दिमाग और दूसरे ज़रूरी अंगों तक ऑक्सीजन वाला खून पहुंचाया जा सके। कार्डियक अरेस्ट के बाद तुरंत सीपीआर से बचने की संभावना काफी बढ़ सकती है।

बीजेपी नई रणनीति के साथ लड़ेगी 2026 का बंगाल विधानसभा का चुनाव

♦ ममता पर व्यक्तिगत हमले के बदले सत्ताधारी पार्टी के नेता–मंत्रियों के भ्रष्टाचार को बनाया जाएगा मुख्य मुद्दा

निज संवाददाता : पश्चिम बंगाल में अगले वर्ष यानी 2026 में विधानसभा चुनाव है। इसके लिए सभी राजनीतिक पार्टियों ने तैयारी शुरू कर दी है। राज्य की प्रमुख विपक्षी पार्टी बीजेपी इस चुनाव में नई रणनीति के साथ मैदान में उतरने की तैयारी कर रही है। बड़ी बात यह कि बीजेपी की रणनीति में बदलाव की वजह पिछले विधानसभा चुनाव से मिले सबक और सीख है। 2021 के पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव में बीजेपी ने अपनी रणनीति मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के इर्द-गिर्द ही तैयार की थी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी समेत बीजेपी नेताओं ने चुनाव प्रचार में सीएम ममता बनर्जी पर व्यक्तिगत हमले किए जो कि बंगाल के लोगों को पसंद नहीं आए। खासकर एक महिला सीएम के खिलाफ व्यक्तिगत टिप्पणी को वोटरों ने पसंद नहीं किया, जिसका खामियाजा बीजेपी को चुनाव में उठाना पड़ा। साथ ही ममता बनर्जी पर बीजेपी नेताओं के व्यक्तिगत हमले का फायदा ममता बनर्जी और टीएमसी को ही हुआ।अब पार्टी ने रणनीति में बदलाव करते हुए तय किया है कि ममता बनर्जी पर व्यक्तिगत हमले नहीं किए जाएंगे पर सरकार की मुखिया के नाते सत्ताधारी पार्टी और नेताओं-मंत्रियों के भ्रष्टाचार और कानून-व्यवस्था की नाकामी को मुख्य मुद्दा बनाया जाएगा और इस पर ममता बनर्जी को निशाने पर रखते हुए जवाब मांगा जाएगा। बीजेपी टीएमसी के उन मंत्रियों और नेताओं के भ्रष्टाचार को मुद्दा बनाकर जल्द अभियान शुरू करेगी, जिन पर करप्शन के आरोप हैं और जो जेल जा चुके हैं या जेल में हैं। बीजेपी अपने चुनावी अभियान का एक प्रमुख मुद्दा राज्य में कानून-व्यवस्था को बनाना चाहती है। हाल ही में सामने आए बलात्कार के मामले और आरजी कर अस्पताल की घटना को महिला सुरक्षा और कानून-व्यवस्था के तौर पर उठाया जाएगा।पार्टी ने यह भी तय किया है कि वो पूरा फोकस स्थानीय मुद्दों पर ही रखेगी। पार्टी इस बार चुनावों में दूसरे दलों से नेताओं को शामिल करने पर ज्यादा जोर नहीं देगी बल्कि उन वरिष्ठ और वफादार कार्यकर्ताओं और नेताओं से दोबारा संपर्क साधा जाएगा, जिन्होंने उतार-चढ़ाव के दौर में भी बीजेपी का साथ नहीं छोड़ा। ऐसे ही लोगों को टिकटों में भी प्राथमिकता दी जाएगी।बीजेपी अपने जमीनी स्तर के कार्यकर्ताओं से मिले इनपुट के आधार पर चुनाव प्रचार के मुद्दे और टिकट वितरण तय करेगी। राज्य के सभी बूथों पर सक्रियता जल्द शुरू की जाएगी। चुनावी अभियान में राज्य की संस्कृति और परंपराओं को भी प्रमुखता दी जाएगी। डबल इंजन सरकार के फायदे को खासतौर पर महिलाओं और युवाओं को आकर्षित करने के लिए प्रमुखता से पेश किया जाएगा।इसके अलावा राज्य की अल्पसंख्यक बहुल सीटों के लिए अलग से रणनीति बनाई जाएगी। दरअसल पार्टी की रणनीति है कि राज्य की 83 मुस्लिम बहुल सीटों में उलझने और ज्यादा ताकत लगाने की बजाय टीएमसी और राज्य सरकार के खिलाफ माहौल बनाया जाए। इसकी शुरुआत बीजेपी जल्द ही बिहार चुनाव के बाद टीएमसी नेताओं के मजबूत गढ़ों से करेगी। बीजेपी का खास फोकस कोलकात्ता और दक्षिण 24 परगना पर रहेगा, जहां से टीएमसी के कई शीर्ष नेता आते हैं।

पश्चिम मेदिनीपुर में बन रही पहली फूड टेस्टिंग लैब

निज संवाददाता : मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के आदेश पर पश्चिम मेदिनीपुर ज़िले में पहली फूड टेस्टिंग लैब बन रही है। अगर करीब करोड़ों रुपये की लागत से यह लैब बनती है, तो न सिर्फ़ शहर बल्कि झाड़ग्राम समेत ज़िले के अलग-अलग इलाकों को फ़ायदा होगा। स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों का कहना है कि शहर में लैब के लिए करीब छह हज़ार स्क्वेयर फ़ीट जगह पहले ही देख ली गई है। इस लैब से हर तरह के खाने की क्वालिटी की जांच हो सकेगी। पहले पूरे जंगलमहल में ऐसी कोई सुविधा नहीं थी, खाने के सैंपल कोलकाता भेजने पड़ते थे, जिससे जांच और नतीजे आने में समय लगता था।पश्चिम मेदिनीपुर सीएमओएच सौम्यशंकर सारंगी ने कहा कि एक बहुत ही अतिविकसित लैब बन रही है। इस लैब से खाने की क्वालिटी की जांच जल्दी हो सकेगी। मैं मुख्यमंत्री को इस लैब के लिए ज़िले को चुनने के लिए धन्यवाद देता हूं।

युवाओं को जागरूक करेगा राज्य उपभोक्ता सुरक्षा विभाग

ऑनलाइन फ्रॉड रोकने की पहल

निज संवाददाता

डिजिटल ज़माने में ऑनलाइन शॉपिंग ज़िंदगी का हिस्सा बन गई है। घर बैठे अपनी पसंदीदा चीज़ें ऑर्डर करना, तुरंत डिलीवरी, सब कुछ अब आपकी उंगलियों पर है। लेकिन इस सुविधा के साथ-साथ फ्रॉड भी बढ़ रहा है। फिशिंग लिंक, फेक ऑफर, फेक वेबसाइट की वजह से आम लोगों का पैसा डूब रहा है। खासकर युवा पीढ़ी इसका सबसे बड़ा शिकार हो रही है। इसीलिए इस बार राज्य कंज्यूमर प्रोटेक्शन डिपार्टमेंट (उपभोक्ता सुरक्षा विभाग) सीधे मैदान में उतर रहा है। लोगों को ऑनलाइन फ्रॉड से बचाने के लिए एक नया जागरुकता कार्यक्रम शुरू किया गया है।कंज्यूमर प्रोटेक्शन डिपार्टमेंट के मुताबिक, जैसे-जैसे ऑनलाइन शॉपिंग बढ़ रही है, शिकायतों की संख्या भी बढ़ रही है। बहुतों को यह नहीं पता कि शिकायत कहां करें या सही हल कैसे पाएं। हालांकि, राज्य में उपभोक्ता सुरक्षा कानून है, जिसमें खास कागजात और सबूत के साथ शिकायत करने पर कार्रवाई होती है। लेकिन कानून से भी बड़ा मुद्दा एक्टिव विजिलेंस है। अगर लोग शॉपिंग करते समय जागरुक रहें, तो बहुत कुछ बचाया जा सकता है। इसीलिए इस बार शिक्षण संस्थानों को जागरुकता केंद्र के तौर पर चुना गया है।राज्य के कई स्कूल, कॉलेज और यूनिवर्सिटी में खास प्रोग्राम शुरू किए गए हैं।

छात्रों को ऑनलाइन पेमेंट के रिस्क, फेक ऑफर्स के नुकसान, ओटीपी या बैंक डिटेल्स शेयर न करने के महत्व के बारे में जागरुक किया जाएगा। असली वेबसाइट और फ्रॉड पेज के बीच का फर्क आसान भाषा में सिखाया जाएगा। वर्ल्ड ह्यूमन डे के मौके पर आयोजित एक कार्यक्रम में इस पहल को लॉन्च किया गया। ईएम बाईपास पर एक होटल में आयोजित इस कार्यक्रम में राज्य के उपभोक्ता सुरक्षा विभाग के मंत्री बिप्लब मित्रा भी शामिल हुए। ध्यान देने वाली बात है कि रोज़ाना की ज़रूरतों से लेकर बैंकिंग सेवा तक लगभग सब कुछ अब ऑनलाइन उपलब्ध है। ट्रेन टिकट से लेकर फ्लाइट बुकिंग तक, सब कुछ एक क्लिक पर उपलब्ध है। लेकिन यह निर्भरता अक्सर खतरे की वजह बनती है। इसलिए, विभाग सिर्फ उपाय ही नहीं, बल्कि बचाव के साथ आगे बढ़ रहा है।

घड़ियाल की तस्वीर ने जीता ग्लोबल अवॉर्ड

कोलकाता के फोटोग्राफर ने कैप्चर किया चंबल का दुर्लभ शॉट

निज संवाददाता : चंबल की ऊबड़-खाबड़ घाटियों से होकर ड्राइव और नदी किनारे घंटों इंतज़ार के बाद एक दुर्लभ पल आया-एक विशाल घड़ियाल अपने बच्चों को अपने सिर और शरीर पर लेकर जा रहा था। कोलकाता के 60 साल के फोटोग्राफर द्वारा खींची गई इस तस्वीर ने उन्हें एक इंटरनेशनल अवॉर्ड दिलाया।हिंदुस्तान पार्क के रहने वाले राजर्षि बनर्जी को 16 अक्टूबर को मॉस्को में गोल्डन टर्टल कॉन्टेस्ट की एनिमल बिहेवियर कैटेगरी में अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। उत्तर प्रदेश के नेशनल चंबल सैंक्चुरी में मई 2024 में ली गई उनकी तस्वीर दुनिया भर के 160 देशों के फोटोग्राफरों की एंट्रीज़ में सबसे अलग थी।यह सम्मान बनर्जी के इंटरनेशनल सम्मानों की लिस्ट में एक और नाम जोड़ता है। उन्होंने केन्या में एक पानी के गड्ढे से पानी पीती शेरनियों और उनके शावकों की तस्वीर के लिए ग्लोबल बिग कैट्स फोटोग्राफी कॉम्पिटिशन 2025 में पहला प्राइज जीता था।चंबल में, बनर्जी इटावा में अपने होटल से मशहूर घाटियों और चंबल नदी के किनारे बसे गांवों से होते हुए ड्राइव करते थे, और फिर अपनी जगह तक पहुंचने के लिए कुछ किलोमीटर पैदल चलते थे।

यह रूटीन छह दिनों तक चला, जिसके बाद आखिरकार उन्हें मनचाही तस्वीरें मिल गईं।बनर्जी ने मॉस्को से बताया-घड़ियाल नदी के किनारों पर अंडे देते हैं और फिर उन्हें रेत से ढक देते हैं। चंबल में मई की भीषण गर्मी में अंडे से बच्चे निकलते हैं। उन्होंने कहा कि अंडे से बच्चे निकलने का मौसम आमतौर पर मई के बीच से आखिर तक होता है जब तापमान 40 डिग्री सेल्सियस से ऊपर चला जाता है।बनर्जी ने कहा-नवजात बच्चे किनारे के पास उथले पानी में तैरते हैं। मां और पिता घड़ियाल बारी-बारी से गहरे पानी से उन पर नज़र रखते हैं।

बनर्जी के अनुसार, घड़ियाल अपने बच्चों को अपने मुंह में नहीं ले जा सकते, इसलिए बच्चे इसके बजाय अपने माता-पिता के सिर और शरीर पर चढ़ जाते हैं। वे ऐसा तब करते हैं जब उन्हें खतरा महसूस होता है या वे बस पास रहना चाहते हैं।

दार्जिलिंग में भयानक सड़क हादसा 2 की मौत, 6 घायल

निज संवाददाता : गुरुवार देर रात दार्जिलिंग के सोनादा ब्लॉक में गोराबाड़ी के पास गुड्डी रोड पर नेशनल हाईवे 110 पर एक पैसेंजर कार बेकाबू होकर गहरी खाई में गिर गई। ड्राइवर और एक पैसेंजर की मौके पर ही मौत हो गई। छह और घायल हो गए। रात के अंधेरे में जैसे ही घटना की खबर फैली, पूरे पहाड़ी इलाके में अफरा-तफरी मच गई।स्थानीय सूत्रों के मुताबिक, कार सिलीगुड़ी से दार्जिलिंग जा रही थी। इसमें ड्राइवर समेत कुल आठ पैसेंजर सवार थे। अचानक मुड़ते समय कार बेकाबू होकर 150 फीट गहरी खाई में गिर गई। हादसे के तुरंत बाद स्थानीय लोगों ने बचाव कार्य शुरू किया और पुलिस और फायर ब्रिगेड को सूचना दी। जोरबंगलो और सोनादा पुलिस स्टेशन की पुलिस, फायर ब्रिगेड और डिजास्टर रिस्पॉन्स टीम के सदस्य तुरंत मौके पर पहुंचे और बचाव अभियान शुरू किया। घुमावदार पहाड़ी रास्ते पर खाई में पड़ी कार से एक-एक करके यात्रियों को बाहर निकाला गया।

वजूद का संकट : हाथ रिक्शा संगठन ने दूसरे पेशे की मांग करते हुए नवान्न को पत्र लिखा

निज संवाददाता : हाथ रिक्शा कोलकाता शहर की एक खास पहचान हैं। लेकिन इन दिनों इस पेशे पर संकट खड़ा हो गया है। ट्राम व पीली टैक्सी की तरह हाथ से चलने वाले रिक्शे भी शहर छोड़ने लगे हैं। असल में, यह भी कोलकाता की एक तस्वीर है। हाथ से चलने वाले रिक्शा पुराने कोलकाता में, खासकर उत्तर और मध्य कोलकाता की गलियों, चित्तरंजन एवेन्यू, कॉलेज स्ट्रीट, बहु बाजार और श्यामपुकुर इलाकों में आज भी मौजूद हैं। वे कभी-कभी भवानीपुर में भी दिख जाते हैं। इन दिनों क्योंकि ज़्यादा आमदनी नहीं है, इसलिए वे दूसरा पेशा ढूंढ रहे हैं। यानी परिवहन का यह ज़रिया अब खतरे में है। इसीलिए हाथ से चलने वाले रिक्शा चलाने वालों के संगठन ने राज्य के मुख्य सचिव मनोज पंत को पत्र लिखकर कहा कि वे दूसरा पेशा ढूंढ रहे हैं। हाल ही में हाथ से चलने वाले रिक्शा चलाने वालों की यूनियन, ऑल बंगाल रिक्शा यूनियन की तरफ से राज्य सचिवालय नवान्न को एक पत्र भेजा गया है।कई साल पहले कोलकाता में हाथ से चलने वाले रिक्शा के लाइसेंस कैंसिल कर दिए गए थे। लेकिन कई ड्राइवर अभी भी अपने पुराने पेशे में बने हुए हैं। संगठन के सदस्यों का कहना है कि ई-रिक्शा को लेकर बातचीत तो हुई है, लेकिन उसे लागू नहीं किया गया है। पत्र में इस रिक्शा संगठन का दावा है कि इस समय करीब 6,000 हाथ से चलने वाले रिक्शा ड्राइवर हैं। उनके पेशे को प्रमोट करने के साथ-साथ उनकी आमदनी बढ़ाने के लिए तुरंत नए इंतज़ाम किए जाने चाहिए। सुप्रीम कोर्ट के उस ऑर्डर का भी ज़िक्र किया गया, जिसमें सुप्रीम कोर्ट ने महाराष्ट्र सरकार से हाथ से चलने वाले रिक्शा को ई-रिक्शा में बदलने को कहा था।

ममता बनर्जी की सरकार लेने जा रही है 29 हजार करोड़ का कर्ज

बीजेपी ने राज्य की अर्थव्यवस्था के लिए बताया खतरा

निज संवाददाता : ममता बनर्जी की सरकार फिर से बड़ा कर्ज लेने जा रही है। मुख्य विपक्षी पार्टी बीजेपी इसे राज्य की अर्थव्यवस्था के लिए अंधेरे भविष्य यानी 'खतरे' के संकेत के तौर पर देख रही है। हालांकि, तृणमूल का तर्क है कि अगर केंद्र ने अलग-अलग सेक्टर से भारी मात्रा में पैसा नहीं रोका होता, तो इतने सारे लोन लेने की ज़रूरत नहीं पड़ती। राज्य की सत्ताधारी पार्टी ने आगे कहा कि सरकार अपनी सीमा में आगे बढ़ रही है, अपनी क्षमताओं को समझ रही है।

पश्चिम बंगाल सरकार चालू वित्तीय वर्ष की तीसरी तिमाही (अक्टूबर से दिसंबर) में बाजार से जो लोन लेगी, उसकी रकम 29 हज़ार करोड़ है। वित्त विभाग के मुताबिक, इस नए लोन को लेने के बाद, अकेले चालू वर्ष में बाजार से लिए गए लोन की रकम करीब 78 हज़ार करोड़ हो जाएगी। आर्थिक विशेषज्ञों का अनुमान है कि चालू वित्तीय वर्ष के आखिर तक राज्य एक साल में कुल कितना मार्केट लोन लेगा। विपक्षी बीजेपी को लोन लेने के इस ट्रेंड में खतरा दिख रहा है। उनके मुताबिक, अगर सरकार ने कर्ज लेकर पैसा नहीं बनाया तो आने वाले दिनों में पश्चिम बंगाल को बड़ी मुश्किल का सामना करना पड़ेगा। राज्य सरकार इस आरोप को नहीं मान रही है। उनके पास इसके उलट तर्क भी हैं। राज्य के करीबी अर्थशास्त्रियों का भी कहना है कि हालात के हिसाब से लोन लेने की रकम और तरीके को देखे बिना कोई आसान एनालिसिस नहीं किया जा सकता।

2025-26 (मौजूदा) वित्तीय वर्ष के लिए राज्य के बजट में करीब 82,000 करोड़ रुपये के मार्केट लोन तय किए गए थे। लेकिन नवान्न का दावा है कि नए प्रोजेक्ट शुरू होने और समय पर सेंट्रल ग्रांट न मिलने से राज्य का अपना खर्च बढ़ गया है। वित्त विभाग के एक अधिकारी ने कहा-सेंट्रल प्रोजेक्ट से समय पर फंड न मिलने की वजह से राज्य को कई प्रोजेक्ट अपने पैसे से शुरू करने पड़ रहे हैं। नतीजतन, भले ही राजस्व आमदनी बढ़ी हो, लेकिन खर्च तेजी से बढ़ रहा है, जिससे लोन पर डिपेंडेंस होना लाजिमी है। सरकारी डेटा के मुताबिक, वित्तीय वर्ष 2023-24 तक राज्य पर कुल कर्ज 6.33 लाख करोड़ रुपये था। 2024-25 में यह बढ़कर 7 लाख करोड़ रुपये से ज़्यादा हो गया। और वित्तीय वर्ष 2025-26 में, बीजेपी संसदीय पार्टी का मानना है कि यह आंकड़ा 8 लाख करोड़ रुपये के करीब पहुंच सकता है। राज्य के विपक्षी नेता शुभेंदु अधिकारी ने आरोप लगाया कि भारी कर्ज के दबाव में सरकार अलग-अलग जनविरोधी तरीकों से पैसा जुटाने जा रही है। उन्होंने कहा-8 लाख करोड़ रुपये उधार लेने वाली राज्य सरकार टोटो रजिस्ट्रेशन के नाम पर पैसा जुटाना चाहती है। चिट फंड को ईडी और सीबीआई ने रोक दिया है। अब राज्य सरकार मुख्य रूप से शराब पर निर्भर है। चुनाव आ रहे हैं। हमें नवंबर-दिसंबर में फिर से कुछ चैरिटी करनी होगी। हमें अलाउंस में 100-200 रुपये बढ़ाने होंगे। खर्चे हैं। वहीं, भाजपा का मानना है कि आने वाले दिनों में राज्य पर कर्ज चुकाने का दबाव बढ़ेगा, क्योंकि कर्ज बढ़ने की दर रेवेन्यू इनकम से कहीं ज्यादा है। भाजपा विधायक और पेशे से स्कूल शिक्षक अरूप दास ने कहा-किसी भी सरकार को ज़रूरत पड़ने पर अलग-अलग समय पर मार्केट से उधार लेना पड़ता है। लेकिन सवाल यह है कि राज्य सरकार उधार लिए गए पैसे का इस्तेमाल कैसे करेगी? अगर हम लोन के पैसे का एक हिस्सा किसी प्रोडक्शन से जुड़े काम के लिए इस्तेमाल नहीं कर सकते, तो आज का लोन कल के लिए बोझ बन जाएगा।

अरूप के मुताबिक-लोन के पैसे का इस्तेमाल सिर्फ़ रोज़ाना के मार्केट के कामों के लिए नहीं किया जाना चाहिए। अगर लोन का इस्तेमाल अलाउंस देने के लिए किया जाता है, तो राज्य को इससे प्रोडक्शन से जुड़ा कोई फ़ायदा नहीं होगा। अगर लोन से कोई संपत्ति नहीं बनती है, तो लिया जा रहा लोन कैसे चुकाया जा सकता है? भाजपा विधायक ने स्पोर्ट्स मेलों पर भी उंगली उठाई। उन्होंने कहा-अगर लोन का पैसा बिना वेल्थ बनाए स्पोर्ट्स, मेलों या अलाउंस देने के लिए इस्तेमाल होता रहा, तो राज्य पर कर्ज़ का बोझ बढ़ता रहेगा। हम देखते हैं कि राज्य सरकार लोन के पैसे का इस्तेमाल वोट की दहलीज़ पार करने के लिए स्पोर्ट्स, मेलों, अलाउंस वगैरह के लिए कर रही है। और राज्य की इकॉनमी दिन-ब-दिन नीचे जा रही है। शॉर्ट में, राज्य सरकार धीरे-धीरे आगे बढ़ रही है। राज्य की इकॉनमी कोमा की ओर ले जा रही है।

अर्थशास्त्री अभिरूप सरकार उधार लेने के मामले को इतने नेगेटिव नज़रिए से देखने से हिचकिचाते हैं। वे कहते हैं-हमें राज्य के जीएसडीपी यानी ग्रॉस स्टेट डोमेस्टिक प्रोडक्ट (राज्य का कुल प्रोडक्शन) के मुकाबले कर्ज़ का अनुपात देखना होगा। क्या वह बढ़ा है? नहीं बढ़ा है। माकपा के ज़माने में यह 45 प्रतिशत था। बाद में यह घटकर 42 प्रतिशत हो गया और अब यह 37 या 38 प्रतिशत लगता है।

अभिरूप के शब्दों में-इसलिए, यह बहुत सीधी सी बात है कि अगर राज्य के पास ज़्यादा पैसा है, तो मैं ज़्यादा लोन ले सकता हूं। एक बड़ी कंपनी हमेशा ज़्यादा लोन लेती है। क्योंकि उनके पास पैसा चुकाने की क्षमता होती है। इसलिए, 8 लाख करोड़ रुपये के लोन को देखकर सब कुछ समझ नहीं आता। हमें देखना होगा कि आमदनी कितनी बढ़ी है और उसके हिसाब से लोन की रकम कितनी बढ़ी है। और हमें नहीं लगता कि यह ज़्यादा बढ़ा है। नवान्न और सत्ताधारी पार्टी का दावा है कि इस बढ़ोतरी का मुख्य कारण कर्ज में डूबे राज्य की सबसे बड़ी वजह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार का राज्य का बकाया रोकना है। प्रधानमंत्री आवास योजना प्रोजेक्ट के तहत केंद्र से ग्रांट न मिलने की वजह से राज्य सरकार ने खुद ही बांग्लार बाड़ी प्रोजेक्ट शुरू किया है। इस वजह से करीब 24 हजार करोड़ रुपये का अतिरिक्त खर्च आया है। इसके अलावा, केंद्र सरकार की तरफ से पिछले दो साल से 100 दिन के प्रोजेक्ट के तहत करीब 21 लाख मजदूरों को मजदूरी न मिलने की वजह से राज्य ने अपने खर्चे पर करीब 3,700 करोड़ रुपये खर्च किए हैं। इसके अलावा, राज्य के नए प्रोग्राम आमादेर पाड़ा आमदेर समाधान पर भी भारी रकम खर्च हो रही है। इस प्रोजेक्ट पर कुल खर्च, हर बूथ पर 10 लाख रुपये के एलोकेशन के साथ, कम से कम 8,000 करोड़ रुपये होगा, जिससे राज्य पर फाइनेंशियल बोझ और बढ़ गया है। इसीलिए वित्तीय वर्ष के तीसरे क्वार्टर में मार्केट से लोन लेना पड़ा है। राज्य की वित्त राज्य मंत्री चंद्रिमा भट्टाचार्य ने राज्य में भाजपा पर उंगली उठाते हुए कहा है कि उन्हें एनडीए की उपेक्षा के खिलाफ मिलकर लड़ें। साथ ही, उनका कहना है कि उनकी सरकार लोन लेने में कभी सीमा पार नहीं करती। चंद्रिमा ने कहा-केंद्र ने हमारा सही बकाया रोक रखा है। फिर भी, हम तय सीमा में लोन ले रहे हैं। कोई नियम नहीं तोड़ा है। लोगों का विकास हमारी प्राथमिकता है। उन्होंने यह भी कहा-जो लोग कहते हैं कि राज्य सरकार लोन के मामले में खराब काम कर रही है, तो उन्हें राज्य सरकार के साथ कोऑर्डिनेट करके केंद्र सरकार से बकाया वसूलना चाहिए। तभी राज्य सरकार को लोन नहीं लेना पड़ेगा।

राशन से जुड़ी समस्या के समाधान के लिए नया कदम

♦ खाद्य विभाग शुरू कर रहा है सेंट्रलाइज़्ड कॉल सेंटर

निज संवाददाता

राज्य का खाद्य विभाग राशन से जुड़ी किसी भी समस्या को जल्दी और पारदर्शी तरीके से हल करने के लिए खास कदम उठा रहा है। इसके तहत एक सेंट्रलाइज़्ड कॉल सेंटर शुरू किया जा रहा है। विभाग के सूत्रों के मुताबिक राशन सेवाओं से जुड़े नागरिक अब आसानी से जान पाएंगे कि उनकी शिकायत का समाधान कैसे हो रहा है। पता चला है कि हर शिकायत के लिए एक अलग टिकट नंबर दिया जाएगा। इससे शिकायत करने वाले आसानी से अगला अपडेट जान पाएंगे। इसके अलावा, एक ही समस्या को दोबारा होने से रोकने के लिए प्रशासनिक स्तर पर कई ज़रूरी कदम उठाए गए हैं। शिकायत की जानकारी का एनालिसिस करके नियमित रिपोर्ट तैयार की जाएगी। प्रशासनिक अधिकारियों का मानना है कि इससे किसी भी समस्या को हल करने में प्रशासनिक कमियों को दूर करना आसान हो जाएगा। पता चला है कि खाद्य विभाग पूरे राज्य में राशन सेवाओं और धान खरीद से जुड़ी शिकायतों के समाधान को ज़्यादा पारदर्शी, आसान और नागरिकों के लिए आसान बनाने के लिए कई कदम उठा रहा है। इस सिस्टम के तहत, सेंट्रल कॉल सेंटर के साथ एक हेल्पडेस्क भी बनाया जा रहा है। सेंट्रलाइज़्ड कॉल सेंटर हफ़्ते के सातों दिन सुबह से रात तक लगातार 12 घंटे काम करेगा। लोगों की सुविधा के लिए जानकारी और शिकायत से जुड़ी मदद तीन भाषाओं, बांग्ला, इंग्लिश और हिंदी में मिलेगी। हेल्पलाइन नंबर 1967, 14445 और 18003455505 हैं। राज्य के लोग एसएमएस, ह्वाट्सऐप, ई-मेल या ऑनलाइन पोर्टल के ज़रिए भी शिकायत दर्ज करा सकते हैं। राशन सेवा से जुड़े नागरिक ही नहीं, बल्कि धान बेचने वाले किसान भी सीधे खाद्य विभाग से संपर्क करके अपनी शिकायतें और समस्याएं दर्ज करा सकते हैं।

हायर सेकेंडरी प्रथम चरण के रिजल्ट की घोषणा

निज संवाददाता : हायर सेकेंडरी परीक्षा के पहले फेज़ (प्रथम चरण) के रिज़ल्ट शुक्रवार को घोषित किए गए। परीक्षा खत्म होने के 39 दिन बाद रिज़ल्ट घोषित किए गए। हायर सेकेंडरी एजुकेशन काउंसिल के अध्यक्ष चिरंजीव भट्टाचार्य ने इस दिन रिज़ल्ट घोषित किए।यह देश का पहला राज्य है जिसने सेमेस्टर सिस्टम में 12वीं क्लास का एग्जाम कराया है। इस परीक्षा में कुल 6,60,260 उम्मीदवारों को शामिल होना था। लेकिन आखिर में 645,832 उम्मीदवारों ने परीक्षा दी।

नवंबर के आखिर या दिसंबर की शुरुआत में राहुल गांधी शुरू कर सकते हैं चुनाव प्रचार

अधीर चौधरी को मिलेगी नई ज़िम्मेदारी

बंगाल विस चुनाव : 2026

निज संवाददाता : करीब सात महीने बाद पश्चिम बंगाल में विधानसभा चुनाव हैं। कांग्रेस की क्या स्ट्रैटेजी होगी? पिछले दो विधानसभा चुनावों की तरह क्या वे इस बार भी लेफ्ट के साथ सीटों का डील करके चुनाव लड़ेंगे? या 294 सीटों पर अकेले लड़ेंगे? अटकलों के बीच कांग्रेस लीडरशिप ने कहा कि लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी नवंबर के आखिर या दिसंबर की शुरुआत में बंगाल में कैंपेन शुरू कर सकते हैं। राहुल का चुनाव कैंपेन शुरू ही हुआ है कि पूर्व प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अधीर चौधरी को भी बंगाल में विधानसभा चुनाव में बड़ी ज़िम्मेदारी मिलने वाली है। बिहार में विधानसभा चुनाव के नतीजे 14 नवंबर को आएंगे। उससे 3 दिन पहले वोटिंग खत्म हो जाएगी। बिहार चुनाव के बाद राहुल बंगाल में कैंपेन करने आ सकते हैं। बंगाल में एआईसीसी ऑब्जर्वर गुलाम अहमद मीर ने राहुल के बंगाल में कैंपेनिंग के बारे में खुलकर बात की। वे अभी कोलकाता में हैं। उन्होंने कहा-हम एक राष्ट्रीय पार्टी हैं। और राष्ट्रीय पार्टी की सेंट्रल लीडरशिप 100 परसेंट आएगी। उनका बंगाल से, यहां के लोगों से ज़्यादा कनेक्शन है। हमारा केंद्रीय नेतृत्व बिहार चुनाव खत्म होने के बाद ही बंगाल आएगा। मीर ने यह भी कहा-पिछले 6 महीने से हम पश्चिम बंगाल में ज़मीन तैयार कर रहे हैं। हम बूथ लेवल तक टीम बना रहे हैं। फिर राहुल गांधी आएंगे और हमारे वर्कर्स के ज़रिए बंगाल के लोगों तक अपनी बात पहुंचाएंगे। वह बंगाल के मुद्दों पर अपना बयान देंगे। फिर जब 6 महीने बाद चुनाव होंगे, तो बंगाल के लोग तय करेंगे। राहुल चुनाव प्रचार के लिए बंगाल कब आ सकते हैं? इसके जवाब में गुलाम अहमद मीर ने कहा-हम कोशिश कर रहे हैं कि राहुल गांधी नए साल से पहले बंगाल आएं। लेकिन यह प्रदेश कांग्रेस कमेटी पर निर्भर करता है। सबसे पहले पार्टी की जिला, ब्लॉक, बूथ कमेटियों को मजबूत करना होगा। ताकि सेंट्रल लीडरशिप का मैसेज राज्य के कोने-कोने तक पहुंचे। पार्टी का यह प्रोसेस नवंबर के बीच तक पूरा हो जाएगा। तब तक बिहार में चुनाव भी खत्म हो जाएंगे। तब राहुल गांधी निश्चित रूप से पश्चिम बंगाल पर फोकस करेंगे बंगाल में विधानसभा चुनाव में पूर्व प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अधीर चौधरी की भूमिका को लेकर भी अटकलें शुरू हो गई हैं। अधीर अभी बिहार में कांग्रेस के लिए चुनाव ऑब्जर्वर के तौर पर काम कर रहे हैं।उन्हें बंगाल में विधानसभा चुनाव में भी बड़ी जिम्मेदारी मिल सकती है। बिहार में चुनाव खत्म होने के बाद राहुल-अधीर का संयुक्त कार्यक्रम बंगाल में देखा जा सकता है। इस बारे में गुलाम अहमद मीर ने कहा-वह एक वरिष्ठ नेता हैं। उन्होंने कई जिम्मेदारियां निभाई हैं। शुभंकर सरकार को प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष इसलिए बनाया गया था क्योंकि वह कई जिम्मेदारियां निभा रहे थे। हालांकि, अधीर चौधरी अभी भी एक अहम भूमिका निभाते हैं।

कोलकाता की पृष्ठभूमि पर लिखी किताब यूएस नेशनल बुक अवॉर्ड की दौड़ में

♦ टॉप लिटरेरी प्राइज़ के लिए शॉर्टलिस्ट की गई मेघा मजूमदार की ए गार्जियन एंड ए थीफ़

♦ ओपरा बुक क्लब ने ए गार्डियन एंड ए थीफ को 2025 की सबसे बेहतरीन फिक्शन किताबों में से एक बताया है

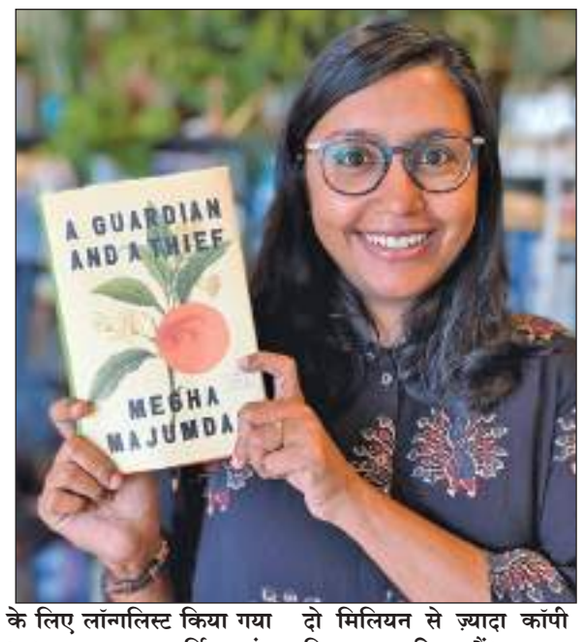

निज संवाददाता : सिटी आफ जाय के नाम से मशहूर महानगर कोलकाता की एक कहानी यूएस नेशनल बुक अवॉर्ड की दौड़ में है, जो अमेरिका के टॉप लिटरेरी प्राइज़ में से एक है। मेघा मजूमदार की ए गार्जियन एंड ए थीफ़ उन पांच फिक्शन में से एक है जिन्हें अगले महीने एक शानदार समारोह में दिए जाने वाले पुरस्कार के लिए शॉर्टलिस्ट किया गया है। बड़ी बात यह कि भारत में जन्मी लेखिका की किताब ए गार्जियन एंड ए थीफ यूएस नेशनल बुक अवॉर्ड के लिए शॉर्टलिस्ट की गई पांच फिक्शन किताबों में से एक है, लेकिन उन्हें पहले ही ऐसी पहचान मिल चुकी है जो और भी फायदेमंद हो सकती है।पिछले नेशनल बुक अवॉर्ड फिक्शन विनर्स में सॉल बेलो जैसे लिटरेरी के बड़े नाम शामिल हैं। इसी तरह झुम्पा लाहिड़ी 2013 में अवॉर्ड के लिए फाइनलिस्ट थीं।मजूमदार का पहला नॉवेल, द बर्निंग भी कोलकाता पर सेट था और 2020 में नेशनल बुक अवॉर्ड के लिए लॉन्गलिस्ट किया गया था। अगर वह ए गार्जियन एंड ए थीफ़ के साथ जीत जाती हैं तो वह यह अवॉर्ड घर ले जाने वाली पहली भारतीय मूल की इंसान होंगी।

हालांकि, मजूमदार को पहले ही ऐसी पहचान मिल चुकी है जो नेशनल बुक अवॉर्ड से भी ज़्यादा फायदेमंद हो सकती है। अमेरिकन टॉक शो होस्ट और सेलिब्रिटी ओपरा विनफ्रे के चलाए जाने वाले ओपरा बुक क्लब ने ए गार्डियन एंड ए थीफ को 2025 की सबसे बेहतरीन फिक्शन किताबों में से एक बताया है। उन्होंने कहा कि वह ''पहले पेज से ही मंत्रमुग्ध हो गई थीं।''ओपरा बुक क्लब की सिफारिशें सोने के बराबर हैं। लेखक और डॉक्टर अब्राहम वर्गीस की द कवनेंट ऑफ वॉटर को बुक क्लब ने मई 2023 में रिकमेंड किया था और तब से इसकी दो मिलियन से ज़्यादा कॉपी बिक चुकी हैं।जलवायु परिवर्तन और अकाल से परेशान कोलकाता के आने वाले समय के एक भयानक कोलकाता की कहानी, ए गार्डियन एंड ए थीफ में उन जिंदगियों को दिखाया गया है जो खास अधिकार और ज़िंदा रहने के बीच फंसी हुई हैं, जिसमें एक चोरी हुआ पर्स सात रोमांचक दिनों में घटनाओं की एक सीरीज़ शुरू करता है।ओपरा की जादुई छड़ी से मजूमदार का कोलकाता की सबसे नई और दिलचस्प साहित्यिक आवाज़ों में से एक बनना लगभग तय है। ए गार्डियन एंड ए थीफ, किरण देसाई की द लोनलीनेस ऑफ सोनिया एंड सनी के साथ, जाने-माने किर्कस प्राइज़ के लिए भी फाइनलिस्ट थी जो महाद्वीपों और उम्मीदों के बीच फंसे एक जोड़े की कोमल कहानी है।ओपरा ने मजूमदार के नॉवेल की तारीफ़ में कोई कमी नहीं छोड़ी है। उन्होंने लिखा है-मेघा मजूमदार उन बहुत काबिल लेखकों में से एक हैं जो हमें किरदारों और कल्चरल झगड़ों की कहानी में ले जाती हैं और आखिरी शब्द तक और उसके बाद भी हमें बांधे रखती हैं। गार्जियन कौन था और चोर कौन था? मैं अभी भी इसके बारे में सोच रही हूं।38 साल की मजूमदार ने ओपरा विनफ्रे से अपनी किताब की तारीफ़ सुनने के अनुभव को ''मेरी ज़िंदगी के कॉन्टेक्स्ट से बाहर'' बताया।कोलकाता इस उपन्यास में एक अहम रोल निभाता है, जैसा कि कई दूसरे उपन्यास में भी है। जलवायु परिवर्तन ने शहर को एक उदास, अकाल से भरे और अक्सर बाढ़ वाले बड़े शहर में बदल दिया है।

मजूमदार की खासियत अमीर और गरीब लोगों की ज़िंदगी के बीच का अंतर दिखाना है।इस किताब में, अमीर लोगों को मा और उनका परिवार दिखाता है, जो मिशिगन जाने वाले हैं, जहां उनके पति को साइंटिस्ट की नौकरी मिल गई है। मां अपनी बेटी और पिता के लिए एक सुरक्षित भविष्य पक्का करने का पक्का इरादा रखती हैं। उन्हें ''क्लाइमेट वीज़ा'' मिला है और उन्हें सात दिनों में निकलना है। गरीबों को बूम्बा रिप्रेजेंट करता है, जो मां के चलाए जा रहे शेल्टर में रहने वाला एक जवान लड़का है, जो अपना गांव छोड़ने के बाद अमीर घरों की शान-शौकत देखकर हैरान है।

कोलकाता नगर निगम ने धापा पर दबाव कम करने के लिए 73 हेक्टेयर खेती की ज़मीन खरीदी

बनाया जाएगा नया वेक्ट प्रोसेसिंग प्लांट

निज संवाददाता : कोलकाता नगर निगम (केएमसी) ने धापा डंपिंग साइट के पास करीब 73 हेक्टेयर खेती की ज़मीन खरीदी है। इस ज़मीन का इस्तेमाल धापा को बढ़ाने और नई लैंडफिल साइट बनाने के लिए किया जाएगा। इसका मुख्य मकसद मौजूदा डंपिंग साइट पर दबाव कम करना और वेस्ट मैनेजमेंट के लिए मॉडर्न इंफ्रास्ट्रक्चर बनाना है। प्रशासनिक सूत्रों के मुताबिक, नगर निगम ने धीरे-धीरे ज़मीन पर फेंसिंग शुरू कर दी है। मुआवज़े की प्रक्रिया भी शुरू हो गई है। कुल 883 किसानों को तीन फेज़ में मुआवज़े के चेक दिए जाएंगे, जिनमें से अब तक 250 किसानों को चेक मिल चुके हैं। नगर निगम के अनुमान के मुताबिक, मुआवज़े के लिए करीब 55 करोड़ रुपये की ज़रूरत होगी। नगर निगम का सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट डिपार्टमेंट अभी हर दिन करीब 1,500 टन कचरे से फर्टिलाइज़र, सीएनजी और प्लास्टिक प्रोडक्ट बनाने में सक्षम है। भविष्य की योजनाओं के मुताबिक, यह कैपेसिटी बढ़ाकर 2,500 टन की जाएगी। नगर निगम के एक अधिकारी ने कहा कि इसके लिए, एक नई रीसाइक्लिंग यूनिट बनाने के लिए 73 हेक्टेयर ज़मीन ज़रूरी है। अधिग्रहित की गई ज़मीन पर मटीरियल रिकवरी प्लांट, सीएनजी और पावर जेनरेशन प्लांट लगाने का प्लान है। एक बड़ा गार्बेज-टू-सोर प्लांट लगाने का भी प्लान है।विशेषज्ञों के मुताबिक, कोलकाता में इस प्रोजेक्ट को लागू करने के लिए जल्दी एक्शन लेने की ज़रूरत है। धापा डंपिंग साइट 1987 में खोली गई थी और अभी यहां हर दिन लगभग 5,000 टन कचरा आ रहा है जो इसकी कैपेसिटी से दोगुना है। नगर निगम के 144 वार्डों से लगभग 4,500 टन कचरा, साथ ही साल्टलेक, न्यूटाउन और पानीहाटी से 500 टन कचरा यहां डाला जाता है। जल्द ही, हावड़ा से और 300 टन कचरा भेजा जाएगा। पर्यावरणविदों ने चेतावनी दी है कि अगर धापा को समय पर बढ़ाया और मेंटेन नहीं किया गया, तो कोई बड़ी मुसीबत आ सकती है। नगर निगम के एक अधिकारी ने कहा-हमने सीढ़ियों की कमज़ोरी के बारे में राज्य सरकार को पहले ही एक रिपोर्ट भेज दी है। इसके अलावा, कोलकाता नगर निगम ने खुद से काम करना शुरू कर दिया है ताकि यह पक्का हो सके कि स्थिति हाथ से बाहर न जाए।

आपदा के बाद सामान्य हो रहे पहाड़ में लौट रहे हैं पर्यटक

नवंबर-दिसंबर में भीड़ बढ़ने की संभावना

निज संवाददाता : प्राकृतिक आपदा के बाद उत्तर बंगाल के पहाड़ी और मैदानी इलाके सामान्य हो रहे हैं। पर्यटक इन इलाकों में लौट रहे हैं। सिक्किम में भी नवंबर के पहले हफ़्ते तक भीड़ रहेगी। इस बार टूरिस्ट सीज़न 16 सितंबर से शुरू हुआ था। लेकिन भारी बारिश की वजह से दार्जिलिंग-कलिम्पोंग की पहाड़ियों, डुआर्स और सिक्किम में ज़्यादा अच्छा नहीं रहा। हड़प्पा बाण और लैंडस्लाइड के डर से कई बुकिंग कैंसिल हो गई हैं। कई लोग आए तो थे लेकिन अपने ट्रैवल प्लान कैंसिल करके लौट गए। ऊपर से, भारी बारिश की वजह से कोलकाता और आस-पास के इलाकों में संकट बढ़ गया है। क्योंकि, पूजा के मौसम में राज्य के स्कूल और कॉलेजों में लंबी छुट्टियां होती हैं, इसलिए कोलकाता और आस-पास के इलाकों से ज़्यादा टूरिस्ट नॉर्थ बंगाल और सिक्किम घूमने आते हैं।हालांकि, ऐसे संकेत हैं कि दुर्गा पूजा के बाद टूरिज़्म का सूखा खत्म हो रहा है। कई टूरिस्ट नॉर्थ बंगाल के साथ-साथ सिक्किम के चुंगथांग, फोडोंग गुफाएं और सेवन सिस्टर्स फॉल्स, लाचुंग, वैली ऑफ फ्लावर्स युमथांग, लाचेन, गुरुडोंगमार घूमने के लिए बुकिंग कर रहे हैं। दार्जिलिंग होटल एसोसिएशन के प्रेसिडेंट विजय खन्ना ने कहा-अलग-अलग राज्यों से टूरिस्ट सर्दियों की बुकिंग के लिए फोन पर पूछताछ कर रहे हैं। वे कमरे बुक कर रहे हैं। हमें उम्मीद है कि पहाड़ियों में भीड़ धीरे-धीरे बढ़ेगी। दार्जिलिंग होटल एसोसिएशन के सूत्रों के मुताबिक, दार्जिलिंग की पहाड़ियों में 350 होटल हैं। कलिम्पोंग में हर होटल में बुकिंग चल रही है। पहाड़ियों में टूरिस्ट की भीड़ बढ़ रही है। दार्जिलिंग और कलिम्पोंग की पहाड़ियों में 2,000 से ज़्यादा होम-स्टे हैं। टूरिस्ट वहां भी बुकिंग के लिए पूछताछ कर रहे हैं। स्टेट इको-टूरिज्म कमेटी के चेयरमैन राज बसु ने कहा-टूरिज्म का संकट खत्म होने वाला है। अभी के लिए, मैं कह सकता हूं कि नवंबर के पहले हफ्ते तक पहाड़ियों पर भीड़ रहेगी। दिसंबर से भीड़ और भी बढ़ जाएगी। जिस तरह से बुकिंग हो रही है, उससे लगता है कि इस बार दूसरे राज्यों से भी टूरिस्ट यहां आएंगे। इस बीच, सिक्किम की ट्रैवल एजेंसियां लैंडस्लाइड की आपदा से उबरने के लिए हांफ रही हैं। वहां 1,725 ट्रैवल एजेंसियां काम कर रही हैं। टूरिस्ट के रहने के लिए होटलों में करीब 38,208 बेड हैं। टूरिस्ट को लाने-ले जाने के लिए करीब 30,000 लग्जरी, साधारण टैक्सी और छोटी कारें हैं। दुर्गा पूजा के सीजन में उन्होंने अपना समय जल्दबाजी में बिताया है। कहीं भी बुकिंग का कोई रिस्पॉन्स नहीं मिला है। गंगटोक के टूरिज्म वर्कर नवीन छेत्री ने कहा कि पूजा का सीजन बहुत खराब रहा है। पिछले कुछ दिनों से बुकिंग को अच्छा रिस्पॉन्स मिल रहा है। अब धीरे-धीरे भीड़ बढ़ेगी।

सुंदरबन में परंपरा ही बन गई जब आजीविका

आदिवासी अपने अस्तित्व के लिए तरीके खोज रहे हैं

निज संवाददाता : सुंदरबन में रजत जुबली गांव के आखिरी छोर पर त्रिपलीघेरी नाम का एक आदिवासी इलाका है, जहां 100 से 120 मुंडा परिवार रहते हैं। त्रिपलीघेरी वहीं से शुरू होता है जहां गांव से होकर गुजरने वाली कंक्रीट की सड़क खत्म होती है।32 साल की दीपाली सरदार त्रिपलीघेरी के मुंडा समुदाय से हैं। वह त्रिपलीघेरी और सजनेखली के लोकल लॉज में आदिवासी डांस करके अपना गुज़ारा करती हैं।

त्रिपलीघेरी सतजेलिया आइलैंड पर है, जबकि सजनेखली गोसाबा में है।वह अकेली नहीं हैं। 50 से ज़्यादा औरतें कम से कम पिछले पांच सालों से यही काम कर रही हैं। यह समय सुंदरबन में टूरिज्म बूम के साथ मेल खाता है।दीपाली का परिवार 19वीं सदी के आखिर में छोटा नागपुर पठार से सुंदरबन आ गया था। उन्होंने कहा-पहले हम सिर्फ़ टुसू के दौरान डांस करते थे। वह सेलिब्रेशन के लिए होता था। अब हम पैसे कमाने के लिए डांस करते हैं। टुसू फ़सलों का त्योहार है। हर परफ़ॉर्मेंस के लिए, आठ डांसर्स का एक ग्रुप 1,000 रुपए कमाता है।उन्हें अभी तक लोकप्रसार प्रकल्पो आइडेंटिटी कार्ड नहीं मिला है, जिससे उन्हें 18 से 60 साल के लोक कलाकारों के लिए राज्य सरकार की एक स्कीम के तहत 1,000 रुपए महीने का स्टाइपेंड मिलेगा।परफ़ॉर्मेंस वाले दिनों में शाम 7 बजे तक, दीपाली अपने काम खत्म करती हैं, अपने बच्चों को खाना खिलाती हैं और निकल जाती हैं। उन्होंने कहा-अगर मुझे गोसाबा जाना है, तो मुझे दो नदियां पार करनी होंगी-दत्ता और गरल। मुझे अजीब घंटों की परवाह नहीं है। यह गुज़ारा करने का एक अच्छा तरीका है। मेरी मां ने अपनी ज़िंदगी जंगल में जाकर जलाने की लकड़ी, खाने लायक जड़ें और फल इकट्ठा करने में बिताई।

यह जीने का कोई तरीका नहीं है।उन्होंने उन दूसरे लोगों के बारे में भी बताया जो खेत में काम करने के लिए बंगलुरू, चेन्नई और आंध्र प्रदेश जाते हैं। उन्होंने कहा-मैंने उनकी बुरी हालत के बारे में सुना है। कुछ को बहुत ज़्यादा काम के बोझ से पैरालिटिक अटैक आ गए, और कुछ कभी वापस नहीं आईं। हां, वे तीन महीने में 30,000 रुपए कमाती हैं। लेकिन मेरे लिए, यह एक बेहतर ऑप्शन है। कम से कम मैं अपने परिवार के साथ घर पर हूं।''इन दिनों, दीपाली की बहन रूपाली भी गुज़ारे के लिए पारंपरिक डांस करती हैं।लेकिन हर किसी को उम्मीद नहीं है। एक महिला, जो पहचान नहीं बताना चाहती थी, ने कहा-दूसरे समुदायों की ज़्यादा से ज़्यादा महिलाएं हमारे आदिवासी डांस स्टेप्स सीख रही हैं। मुझे डर है कि एक दिन, हम ग्रुप में माइनॉरिटी बन जाएंगे। दूसरे लोग हमारा डांस करेंगे।

हल करो हीरो बनो का उत्तर

1.न्यूज़ीलैंड, 2.टिम बर्नर्स-ली, 3.प्रशांत महासागर, 4. इंग्लैंड, 5. जापान 6.प्रतिभा पाटिल

संपादकीय

विरोधाभास से भरा बंगाल का स्कूली शिक्षा माहौल

पश्चिम बंगाल में स्कूलिंग का माहौल एक अजीब बात से पता चलता है। केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय के डेटा से पता चला है कि एक तरफ, देश के लगभग आधे ज़ीरो-एनरोलमेंट (शून्य-नामांकन) स्कूल इसी राज्य में हैं। 2024-25 में 3,812 इंस्टीट्यूशनजिनमें कुल मिलाकर 17,965 शिक्षक हैं। फिर भी, दूसरी तरफ, राज्य में औसत छात्र-शिक्षक अनुपात 29:1 है, जो राष्ट्रीय औसत 24:1 से काफी ज़्यादा है। इससे पता चलता है कि दूसरे राज्यों में शिक्षकों की जो भारी कमी है, वह बंगाल में नहीं है। इस अजीब सी उलझन का मतलब यह है कि बड़ी संख्या में शिक्षकों को ऐसे स्कूलों में नियुक्त किया जाता है जहां कोई छात्र नहीं आता, जबकि दूसरे स्कूल ज़रूरी स्टाफ देने के लिए संघर्ष करते हैं। इसका नतीजा दोहरी नाकामी है। बेकार संस्थानों में संसाधन बर्बाद होते हैं और कम स्टाफ वाले स्कूलों में बच्चों के लिए शिक्षा का वादा अधूरा रह जाता है। यह अंतर संसाधनों के बंटवारे और निगरानी में नाकामी दिखाता है। अतिरिक्त शिक्षकों को ट्रांसफर करने या अपने स्कूल नेटवर्क को सही बनाने में सरकार की हिचकिचाहट ने समय के साथ इस असंतुलन को और बढ़ने दिया है। लेकिन इससे भी ज़रूरी सवाल यह है: बंगाल के इतने सारे स्कूलों में कोई छात्र क्यों नहीं है? डेमोग्राफिक बदलाव कहानी का एक हिस्सा हैं। लेकिन इससे यह नहीं पता चलता कि ठीक-ठाक स्कूल बच्चों को आकर्षित क्यों नहीं कर पाते। सच तो यह है कि सरकारी स्कूलों में लोगों का भरोसा कम हो रहा है। अभिभावकों को बिना वजह नहीं लगता है कि सरकारी स्कूल खराब तरीके से चलते हैं, उन पर कम निगरानी होती है, और वे सीखने से ज़्यादा ब्यूरोक्रेटिक रिपोर्टिंग पर फोकस करते हैं। दूसरी तरफ, प्राइवेट स्कूल, भले ही वे छोटे हों, उन्हें पढ़ाई देने के लिए ज़्यादा भरोसेमंद माना जाता है। इसका नतीजा यह है कि पब्लिक स्कूलिंग सिस्टम से लोग चुपचाप और चिंताजनक तरीके से दूर हो रहे हैं, खासकर निम्न-मध्य-वर्ग परिवारों में। इस बीच, गरीब समुदायों में, स्कूल पढ़ाई के वादे के बजाय ज़्यादातर मिड-डे मील और फ्री यूनिफॉर्म के लालच पर चल रहे हैं।इसे बदलने के लिए, बंगाल को स्कूल संचालन और शिक्षक नियुक्ति का पूरा ऑडिट करने की ज़रूरत है। ज़ीरो-एनरोलमेंट वाले स्कूलों को मर्ज या बंद कर देना चाहिए और शिक्षकों को एकल-शिक्षक स्कूलों में फिर से भेजना चाहिए, जो राज्य में 2.3 लाख से ज़्यादा छात्रों को पढ़ाते हैं। स्कूलिंग की गुणवत्ता में भी सुधार की ज़रूरत है। सही पढ़ाई के लिए प्रशिक्षित और समर्पित शिक्षक, पूरा करिकुलम कवरेज, अच्छा इंफ्रास्ट्रक्चर और जवाबदेह मैनेजमेंट ज़रूरी है। ऐसे कदम भी उठाए जाने चाहिए जिनसे न सिर्फ़ एनरोलमेंट बढ़े बल्कि स्कूलों तक पहुंच भी आसान हो, खासकर लड़कियों के लिए। बंगाल की कल्याणकारी योजनाएं कन्याश्री, शिक्षाश्री, मेधाश्रीपहले ही दिखा चुकी हैं कि टारगेटेड इंसेंटिव से अटेंडेंस बढ़ सकती है। शिक्षक नियुक्ति में गहरी नाकामी और बढ़ावा देने का सामना करने के लिए प्रशासनिक और राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी है।

राष्ट्रीय एकता के बेजोड़ शिल्पी थे सरदार पटेल

रमेश सर्राफ धमोरा

३१ अक्टूबर जयन्ती पर विशेष

सरदार वल्लभभाई पटेल स्वतंत्रता सेनानी और राजनेता थे जो भारत के पहले उप-प्रधानमंत्री और गृह मंत्री बने। उन्होंने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और स्वतंत्र भारत में सभी रियासतों के एकीकरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। जिसके लिए उन्हें लौह पुरुष भी कहा जाता है। सरदार वल्लभभाई पटेल ने भारतीय नागरिक सेवाओं आईसीएस का भारतीयकरण कर इन्हें भारतीय प्रशासनिक सेवाएं आईएएस बनाया। अंग्रेजों की सेवा करने वालों में विश्वास भरकर उन्हें देशभक्ति की ओर मोड़ा।स्वतंत्र भारत के पहले तीन वर्ष सरदार पटेल देश के प्रथम उप-प्रधानमंत्री, गृह मंत्री, सूचना प्रसारण मंत्री रहे। पटेल ने भारतीय संघ में उन रियासतों का विलय किया जो स्वयं में सम्प्रभुता प्राप्त थीं। उनका अलग झंडा और अलग शासक था। सरदार पटेल ने आजादी के पूर्व ही देशी राज्यों को भारत में मिलाने के लिये कार्य आरम्भ कर दिया था। सरदार पटेल के प्रयास से 15 अगस्त 1947 तक हैदराबाद, कश्मीर और जूनागढ़ को छोडकर शेष भारतीय रियासतें भारत संघ में सम्मिलित हो चुकी थी।महात्मा गांधी ने सरदार वल्लभभाई पटेल को सरदार की उपाधि दी थी। उन्हें भारत के बिस्मार्क के रूप में भी जाना जाता है क्योंकि उन्होंने भारत को एकजुट करने में एक प्रमुख भूमिका निभाई थी। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को वैचारिक एवं क्रियात्मक रूप में एक नई दिशा देने के कारण सरदार पटेल ने राजनीतिक इतिहास में एक गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त किया। उनके कठोर व्यक्तित्व में संगठन कुशलता, राजनीतिक सत्ता तथा राष्ट्रीय एकता के प्रति अटूट निष्ठा थी। भारत के स्वतंत्रता संग्राम मे उनका महत्वपूर्ण योगदान था।सरदार वल्लभ भाई पटेल का जन्म 31 अक्टूबर 1875 में गुजरात के नाडियाड में लेवा पट्टीदार जाति के एक जमींदार परिवार में हुआ था। वे अपने पिता झवेरभाई पटेल एवं माता लाड़बाई की चौथी संतान थे। सरदार पटेल ने करमसद में प्राथमिक विद्यालय और पेटलाद स्थित उच्च विद्यालय में शिक्षा प्राप्त की थी। लेकिन उन्होंने अधिकांश ज्ञान स्वाध्याय से ही अर्जित किया। 16 वर्ष की आयु में उनका विवाह हो गया। 22 साल की उम्र में उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा पास की और जिला अधिवक्ता की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए। जिससे उन्हें वकालत करने की अनुमति मिली। सरदार पटेल के पांच भाई व एक बहन थी। 1908 में पटेल की पत्नी की मृत्यु हो गई। उस समय उनके एक पुत्र और एक पुत्री थी। इसके बाद उन्होंने विधुर जीवन व्यतीत किया। वकालत के पेशे में तरक्की करने के लिए कृतसंकल्प पटेल ने अध्ययन के लिए अगस्त 1910 में लंदन की यात्रा की।सरदार पटेल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष पद के तीन बार उम्मीदवार बने मगर तीनो ही बार महात्मा गांधी ने हस्तक्षेप कर पण्डित जवाहरलाल नेहरू को कांग्रेस का अध्यक्ष बनवा दिया था। 1930 में नमक सत्याग्रह के दौरान पटेल को तीन महीने की जेल हुई। मार्च 1931 में उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के करांची अधिवेशन की अध्यक्षता की। जनवरी 1932 में उन्हें फिर गिरफ्तार कर लिया गया। जुलाई 1934 में वह रिहा हुए और 1937 के चुनावों में उन्होंने कांग्रेस पार्टी के संगठन को व्यवस्थित किया। अक्टूबर 1940 में कांग्रेस के अन्य नेताओं के साथ पटेल भी गिरफ्तार हुए और अगस्त 1941 में रिहा हुए। 1945-1946 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष पद के लिए सरदार पटेल प्रमुख उम्मीदवार थे। लेकिन महात्मा गांधी ने हस्तक्षेप करके जवाहरलाल नेहरू को अध्यक्ष बनवा दिया। कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में नेहरू को ब्रिटिश वाइसरॉय ने अंतरिम सरकार के गठन के लिए आमंत्रित किया। इस प्रकार यदि घटनाक्रम सामान्य रहता तो सरदार पटेल भारत के पहले प्रधानमंत्री होते।गृहमंत्री बनने के बाद भारतीय रियासतों के विलय की जिम्मेदारी सरदार पटेल को ही सौंपी गई थी। उन्होंने अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए 562 छोटी-बड़ी रियासतों का भारतीय संघ में विलीनीकरण करके भारतीय एकता का निर्माण किया। विश्व के इतिहास में एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं हुआ जिसने इतनी बड़ी संख्या में राज्यों का एकीकरण करने का साहस किया हो। देशी रियासतों का विलय स्वतंत्र भारत की पहली उपलब्धि थी और निर्विवाद रूप से पटेल का इसमें विशेष योगदान था। नीतिगत दृढ़ता के लिए राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने उन्हें सरदार और लौह पुरुष की उपाधि दी थी। वल्लभ भाई पटेल ने आजाद भारत को एक विशाल राष्ट्र बनाने में उल्लेखनीय योगदान दिया।जूनागढ़ के नवाब के विरुद्ध जब वहां की प्रजा ने विरोध कर दिया तो वह भागकर पाकिस्तान चला गया और इस प्रकार जूनागढ भी भारत में मिला लिया गया। जब हैदराबाद के निजाम ने भारत में विलय का प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया तो सरदार पटेल ने वहां सेना भेजकर निजाम का आत्मसमर्पण करा लिया। नि: संदेह सरदार पटेल द्वारा 562 रियासतों का एकीकरण विश्व इतिहास का एक आश्चर्य था। भारत की यह रक्तहीन क्रांति थी।

लक्षद्वीप समूह को भारत में मिलाने में भी पटेल की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। इस क्षेत्र के लोग देश की मुख्यधारा से कटे हुए थे और उन्हें भारत की आजादी की जानकारी 15 अगस्त 1947 के कई दिनों बाद मिली। हालांकि यह क्षेत्र पाकिस्तान के नजदीक नहीं था लेकिन पटेल को लगता था कि इस पर पाकिस्तान दावा कर सकता है। इसलिए ऐसी किसी भी स्थिति को टालने के लिए पटेल ने लक्षद्वीप में राष्ट्रीय ध्वज फहराने के लिए भारतीय नौसेना का एक जहाज भेजा। इसके कुछ घंटे बाद ही पाकिस्तानी नौसेना के जहाज लक्षद्वीप के पास मंडराते देखे गए। लेकिन वहां भारत का झंडा लहराते देख उन्हें वापस लौटना पड़ा।जब चीन के प्रधानमंत्री चाऊ एन लाई ने जवाहरलाल नेहरू को पत्र लिखा कि वे तिब्बत को चीन का अंग मान लें तो पटेल ने नेहरू से आग्रह किया कि वे तिब्बत पर चीन का प्रभुत्व कतई न स्वीकारें अन्यथा चीन भारत के लिए खतरनाक सिद्ध होगा। जवाहरलाल नेहरू नहीं माने बस इसी भूल के कारण हमें चीन से पिटना पड़ा और चीन ने हमारी सीमा की भूमि पर कब्जा कर लिया। सरदार पटेल के ऐतिहासिक कार्यों में सोमनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण, गांधी स्मारक निधि की स्थापना, कमला नेहरू अस्पताल की रूपरेखा आदि कार्य शामिल हैं।सरदार पटेल का निधन 15 दिसम्बर 1950 को मुम्बई में हुआ था। सरदार पटेल को उनकी मृत्यु के 41 साल बाद 1991 में मरणोपरांत भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न दिया गया जो उन्हे बहुत पहले मिलना चाहिये था। वर्ष 2014 में केन्द्र की नरेन्द्र मोदी सरकार ने सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयन्ती (31 अक्टूबर) को देश भर में राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाना शुरू कर उनको सम्मनित किया है।प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कुछ वर्ष पूर्व गुजरात के नर्मदा जिले में सरदार पटेल के स्मारक का उद्घाटन किया था। इसका नाम एकता की मूर्ति (स्टैच्यू ऑफ यूनिटी) रखा गया है।

यह मूर्ति स्टैच्यू ऑफ लिबर्टी से दुगनी ऊंचाई 182 मीटर ऊंची बनाई गयी है। इस प्रतिमा को केवडिया के निकट साधुबेट नामक एक छोटे चट्टानी द्वीप में सरदार सरोवर बांध के सामने नर्मदा नदी के मध्य में स्थापित किया गया है। सरदार वल्लभ भाई पटेल की यह प्रतिमा दुनिया की सबसे ऊंची प्रतिमा है। सरदार पटेल की इस प्रतिमा को देखकर अंदाजा लगाया जा सकता है कि उनका व्यक्तित्व कितना विशाल था। सरदार यानि नेतृत्व करने का गुण तो उनमें जन्मजात था ही। संघर्षो में तपकर उनका मनोबल लौहे की तरह दृढ़ हो गया था। अपनी इसी इच्छा शक्ति व दृढ़ मनोबल के दम पर उन्होने देश की आजादी के बाद एक भारत बनाने का ऐसा मुश्किल काम कर दिखाया जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। भारत के राजनीतिक इतिहास में सरदार पटेल के योगदान को कभी नहीं भुलाया जा सकता। देश की आजादी के संघर्ष में उन्होने जितना योगदान दिया उससे ज्यादा योगदान उन्होने स्वतंत्र भारत को एक करने में दिया। पटेल राष्ट्रीय एकता के बेजोड़ शिल्पी व नये भारत के निर्माता थे। देश के विकास में सरदार वल्लभभाई पटेल के महत्व को सैदव याद रखा जायेगा।

जानें अपना राशिफल

मेष

उतार-चढ़ाव वाला समय हो सकता है इसलिए सिर्फ काम करने पर ध्यान रखने की आवश्यकता है, किसी के चक्कर में आने से बनता काम बिगड़ सकता है सावधान रहे, मन वश में रखे।

वृषभ

नुकसान वाला समय हो सकता है इसलिए जो भी काम कर रहे हैं सोच समझकर ही करे, किसी पर ज्यादा भरोसा परेशानी का कारण बन सकता है, अपनी बुद्धिमानी दिखाने की आवश्यकता है, मन वश में रखे।

मिथुन

उलझन वाला समय हो सकता है इसलिए जो भी काम कर रहे हैं किसी से राय लेकर ही करे, कोई सरकारी समस्या का सामना करना पड़ सकता है सावधान रहे, बिना काम बाहर नहीं जाये, मन शान्त रखे।

कर्क

आर्थिक मजबुती वाला समय हो सकता है इसलिए जो भी काम कर रहे हैं फायदा अवश्य होगा, कोई चमत्कारी काम बन सकता है, किसी पर भरोसा करके काम करने की आवश्यकता है, मन प्रसन्न रहेगा।

सिंह

वाद-विवाद वाला समय हो सकता है इसलिए सिर्फ काम करने पर ध्यान रखने की आवश्यकता है, किसी के बहकावे में आने से बनता काम बिगड़ सकता है, बिना काम बाहर नहीं जाये, मन वश में रखे।

कन्या

आलस्य भरा समय हो सकता है इसलिए ज्यादा से ज्यादा काम करने पर ध्यान रखने की आवश्यकता है, कोई परिवार का सदस्य आपका समय खराब कर सकता है सावधान रहे, मन स्थिर रखे।

तुला

मजबुत समय हो सकता है, कोई बहुत दिनों से रुकाहुआ काम आगे बढ़ सकता है प्रयास करे, किसी अन्य व्यक्ति से काम आगे बढ़ सकता है प्रयास करे, जीवनसाथी पुरा साथ दे सकते हैं, मन में उत्साह रहेगा।

वृश्चिक

सामाजिक समय हो सकता है, कोई रुकाहुआ मांगलिक कार्य पुरा हो सकता है प्रयास करे, कोई चमत्कारी काम बन सकता है, किसी नये व्यक्ति से काम आगे बढ़ सकता है प्रयास करे, मन स्थिर रखे।

धनु

सुख-शान्ति वाला समय हो सकता है इसलिए जो भी काम कर रहे हैं फायदा अवश्य होगा, अचानक धन लाभ भी हो सकता है, किसी पर भरोसा करके काम करने की आवश्यकता है, मन प्रसन्न रहेगा।

मकर

परोपकारी समय हो सकता है, कोई रुकाहुआ मांगलिक कार्य पुरा हो सकता है प्रयास करे, किसी अन्य व्यक्ति से काम आगे बढ़ सकता है प्रयास करे, परिवार के लोग पुरा साथ दे सकते हैं, मन शान्त रखे।

कुंभ

परिश्रम भरा समय हो सकता है इसलिए ज्यादा से ज्यादा काम करने पर ध्यान रखने की आवश्यकता है, कोई चमत्कारी काम बन सकता है, पुरी नैतिकता से काम करने की आवश्यकता है, मन शान्त रखे।

मीन

आमदनी वाला समय हो सकता है इसलिए ज्यादा से ज्यादा काम करने की आवश्यकता है, कोई बड़ा काम करने का अवसर मिल सकता है प्रयास करे, परिवार के लोग पुरा साथ दे सकते हैं, मन स्थिर रखे।

असली माँ कौन

एक बार दो स्त्रियाँ एक बच्चे के लिए झगड़ रही थीं। प्रत्येक स्त्री यह दावा कर रही थी कि वही उस बच्चे की असली माँ है। जब किसी तरह झगड़ा नहीं सुलझा तो लोगों ने उन दोनों को न्यायधीश के सामने पेश किया।

न्यायधीश ने ध्यानपूर्वक दोनों की दलीलें सुनीं। न्यायधीश के लिए भी यह निर्णय करना मुश्किल हो गया कि बच्चे की असली माँ कौन थी। न्यायधीश ने बहुत सोच-विचार किया। अखिरकार उसे एक उपाय सूझा। उसने अपने कर्मचारी को आदेश दिया, ''इस बच्चे के दो टुकड़े कर दो और एक-एक टुकड़ा दोनों स्त्रियों को दे दो।''

न्यायधीश का आदेश सुनकर उनमें से एक स्त्री ने धाड़ मारकर रोते हुए कहा, ''नहीं, नहीं! ऐसा जुल्म मत करो। दया करो सरकार। भले ही यह बच्चा इसी स्त्री को दे दो, लेकिन मेरे लाल को जिंदा रहने दो! मैं बच्चे पर अपना दावा छोड़ देती हूँ।''

पर दूसरी स्त्री कुछ नहीं बोली। वह चुपचाप यह सब देखती रही। अब चतुर न्यायधीश को मालूम हो गया था कि बच्चे की असली माँ कौन है। उसने बच्चा उस स्त्री को सौप दिया, जो उस पर अपना दावा छोड़ने के लिए तैयार थी। उसने दूसरी स्त्री को जेल भेज दिया।

शिक्षा - सच्चाई की सदा विजय होती है।

मकड़ी की सीख

एक बार दो राजाओ के बीच युद्ध छिड़ गया। उनमें से एक राजा पराजित हो गया। वह जंगल की ओर भाग गया। उसने एक गुफा में शरण ली। विजयी राजा ने उसका पीछा करने के सैनिक भेजे। वह उसे जान से मार डालना चाहता था। पराजित राजा बहुत बहादुरी से लड़ा था। पर उसकी सेना थोड़ी थी। शत्रु की विशाल सेना ने उसकी छोटी सी सेना को हरा दिया था। मजबूर होकर अपनी जान बचाने के लिए उसे जंगल मे भागना पड़ा। वह बहुत दुःखी हो गया और हिम्मत हार बैठा। एक दिन उदास होकर राजा गुफा मे लेटा हुआ था। तभी उसका ध्यान एक छोटी-सी मकड़ी की ओर गया। वह गुफा की छत के एक कोने मे जाला बुनने का प्रयत्न कर रही थी। वह सरपट दीवार पर चढ़ती। बीच में जाले का कोई धागा टूटता और वह जमीन पर आ गिरती। बार-बार यही होता रहा पर मकड़ी हिम्मत नहीं हारी। वह बार-बार प्रयास करती रही। आखिरकार जाला बुनते-बुनते वह छत तक पहुँचने मे सफल हो गयी। उसने पूरा जाला बुन-कर तैयार कर दिया। राजा ने सोचा, ''यह रेंगनेवाली नन्ही-सी मकड़ी बार-बार असफल होती रही, लेकिन इसने प्रयास करना नही छोड़ा। मैं तो राजा हूँ। फिर मैं प्रयास करना क्यों छोड़ दूँ। मुझे फिर से प्रयत्न करना चाहिए।'' उसने दुश्मन से एक बार फिर युद्ध करने का निश्चय किया। राजा जंगल से बाहर निकलकर अपने विश्वासपात्र सहयोगियों से मिला। उसने अपने राज्य के शूर-वीरो को एकत्र किया। और शक्तिशाली सेना खड़ी की। उसने पूरी ताकत से दुश्मन पर चढ़ाई कर दी। वह वीरता पूर्वक लड़ा। आखिरकार उसकी विजय हुई। उसे अपना राज्य वापस मिल गया। राजा उस मकड़ी को जिंदगी भर नही भूल सका, जिसने उसे सदा प्रयास करते रहने का सबक सिखाया था।

शिक्षा - असफलताओ से जूझनेवालों को एक दिन सफलता अवश्य मिलती है।

हल करो हीरो बनो

1. किस देश ने सबसे पहले महिलाओं को मतदान का अधिकार दिया था?
(क) अमेरिका (ख) न्यूजीलैंड
(ग) ब्रिटेन (घ) ऑस्ट्रेलिया
2. इंटरनेट का अविष्कार किसने किया?
(क) टिम बर्नर्स-ली (ख) वेंटन सर्फ
(ग) मार्क जुकरबर्ग (घ) बिल गेट्स
3. दुनिया का सबसे बड़ा महासागर कौन सा है?
(क) अटलांटिक महासागर (ख) भारतीय महासागर
(ग) आर्कटिक महासागर (घ) प्रशांत महासागर
4. किस देश में 'बिग बेन' घड़ी स्थित है?
(क) अमेरिका (ख) इंग्लैंड
(ग) फ्रांस (घ) जर्मनी
5. किस देश की मुद्रा 'येन' है?
(क) चीन (ख) भारत
(ग) जापान (घ) दक्षिण कोरिया
6. भारत की पहली महिला राष्ट्रपति कौन थीं?
(क) सुमित्रा महाजन (ख) प्रतिभा पाटिल
(ग) इंदिरा गांधी (घ) कुमारी शैलजा

(उत्तर इसी अंक में)

माथापच्ची-13

					2	6		5
	8		6	9				
		4	1	5			3	
3	7	1						4
			8		5			
9						2	6	3
	4			1	8	7		
				6	4		2	
6		3	2					

नियम : प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक अंक भरे जाने आवश्यक है, इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी एवं खड़ी पंक्ति में एवं 3 3 के वर्ग में अंक की पुनरावृत्ति न हो, पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।

उत्तर अगले अंक में

माथापच्ची 12 का हल

3	4	2	8	9	1	7	6	5
1	7	5	2	3	6	8	4	9
9	6	8	4	7	5	3	1	2
2	8	6	3	5	4	1	9	7
7	1	3	6	8	9	2	5	4
5	9	4	1	2	7	6	3	8
8	5	1	9	6	2	4	7	3
4	3	7	5	1	8	9	2	6
6	2	9	7	4	3	5	8	1

मार लो मुस्की

एक आदमी साधू से बोला बाबा, मेरी बीवी बहुत परेशान करती है, कोई उपाय बताओ.
साधू: बेटा, उपाय होता तो मैं साधू क्यों बनता?

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

पप्पू पर बिजली का तार गिर गया, पप्पू तड़प तड़प के मरने ही वाला था कि अचानक उसे याद आया की बिजली तो 2 दिन से बंद हैवापस उठकर हँसते हुए बोला की साला याद नही आता तो मर ही जाता।

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

कल रात पीने के बाद तो हद ही हो गई यारों .., होटल समझ कर अदालत में चले गए। सामने बैठा जज बोला ऑर्डर ऑर्डर, हमने भी बोल दिया एक चिकन और दो क्वार्टर।

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

बीवी की अति सुन्दर सहेली घर आई थी। पति भी वहीं बैठा उसे देखता रहा, कुछ देर बाद प्रेशर कुकर की 12 सीटियां बज चुकने पर पति ने पत्नी से कहा, ''किचन मे देखो, दाल जल जाएगी।
बीवी ने कहा, ''जल जाने दो, पर तुम्हारी दाल नहीं गलने दूंगी।

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

टीचर-आज मैं तुमको पढ़ाऊंगी
टीचर- पप्पू तू खड़ा हो
पप्पू- जी मैडम
टीचर-लड़की सबसे हंस के बात करती है इसमें लड़की क्या है?
पप्पू- जी लड़की बिगड़ी हुई है सेटिंग करना चाहती है।

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

बच्चा - नल से आते पानी को देखकर बोला, पापा ये पानी कहाँ से आता है?
पापा - बेटा नदी से
बेटा - तो फिर मुझे नदी देखनी है। पापा उसे नदी दिखाने ले जाते हैं। बच्चा उन्हें नदी में धक्का मारकर गिरा देता है और भागता हुआ घर आकर माँ को कहता है, मम्मी जल्दी से नल खोलो, पापा आते होंगे।

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

लड़का शादी के लिए लड़की देखने गया उसने सोचा, क्यों न लड़की से अंग्रेजी में बात करूँ
उसने लड़की से पूछा- इंग्लिस चलेगी ना ?
लड़की शरमाते हुए बोली जी प्याज और नमकीन साथ हो तो देशी भी चलेगी ..।

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

एक गंजा आदमी बस से उतर रहा था, उसे पीछे से किसी ने धक्का दिया।
गंजा आदमी: क्यों भाई सिर पर चढ़े जा रहे हो?
दूसरा आदमी: नहीं भाई, आपके सिर पर चढ़कर फिसलना नहीं है।

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

एक रात एक चोर एक आदमी के घर घुस आया, पिस्तौल दिखाकर बोला, ''बता सोना कहां है?''
आदमी: ''अबे, उल्ल के पट्ठे..इतनी सी बात के लिए पिस्तौल दिखाने की क्या जरूरत थी.. पूरा घर खाली पड़ा है, जहां मरजी सो जा !!''

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

माँ : रो क्यूं रहे हो।
बेटा: पापा ने मुझे किस नहीं किया।
माँ : तुमने पापा को पहाड़े नहीं सुनाये होंगे।
बेटा: कामवाली ने कौन से पहाड़े सुनाये थे...

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

गधा: मेरा मालिक मुझे बहुत पीटता है
कुत्ता: तुम भाग क्यो नही जाते
गधा: मालिक की खुबसूरत लडकी जब पढाई नही करती है तो वो कहता है कि ''तेरी शादी गधे से कर दूंगा, बस इसी उम्मीद से टिका हूँ।

छठ महात्म्य की प्रासंगिकता

गोविन्द अग्रवाल

छठ पूजा पर विशेष

कार्तिकेय माह के छठवें दिन होनेवाले इस महा लोकपर्व छइठ या छठपूजा के महात्म्य की प्रासंगिकता वैदिक काल से लेकर आज भी धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण है। यह पर्व सूर्योपासना और छठी मैया की उपासना पर आधारित है, जो महाभारत काल से जुड़ा हुआ है। इसकी प्रासंगिकता संतान प्राप्ति, आरोग्य, समृद्धि और पारिवारिक सौहार्द की कामना से जुड़ी है। इसके वैज्ञानिक पहलुओं में यह अनुष्ठान प्रतिरक्षा प्रणाली को बेहतर बनाने में मदद कर सकता है, जबकि सांस्कृतिक रूप से यह मिट्टी की कला, पारंपरिक भोजन और सामाजिक समरसता को बढ़ावा देता है। धार्मिक और पौराणिक प्रासंगिकता छठ पूजा की जड़ें महाभारत काल से मानी जाती हैं। द्रौपदी ने पांडवों के कष्टों से मुक्ति पाने के लिए सूर्य देव की उपासना की थी। द्वापर युग में दानवीर कर्ण को भी सूर्य का भक्त माना जाता है, जिन्होंने प्रतिदिन सूर्य को अर्घ्य दिया।पुत्र प्राप्ति और आरोग्य एक कथा के अनुसार, राजा प्रियव्रत ने पुत्र प्राप्ति के लिए छठ का व्रत किया और उन्हें आरोग्य की प्राप्ति हुई। इसी तरह राजा प्रियव्रत को कुष्ठ रोग से मुक्ति मिली थी।छठी मैया यह पर्व छठी मैया को भी समर्पित है, जो मां के छठे स्वरूप और ब्रह्मा जी की मानस पुत्री मानी जाती हैं। सामाजिक और सांस्कृतिक प्रासंगिकता छठ पूजा विश्व के उन कुछ त्योहारों में से एक है, जहां देवी-देवताओं की मूर्ति पूजा नहीं होती।समानता का प्रतीक : यह एक ऐसा पर्व है जो जाति, धर्म, लिंग और सामाजिक भेदभावरहित सबको सूर्यदेव की आराधना करने का अवसर देता है। पारंपरिक मिट्टी के उत्पाद : यह पर्व पारंपरिक मिट्टी के बर्तनों, बांस की टोकरियों और गोबर से बने चूल्हों के उपयोग को बढ़ावा देता है।समृद्धि और मेलजोल छठ पूजा लोगों को एक-दूसरे के साथ मिल कर, प्रकृति के साथ जुड़ कर और पारंपरिक तरीकों से त्योहार मनाने के लिए प्रेरित करती है। वैज्ञानिक और स्वास्थ्य संबंधी प्रासंगिकता उपवास और सूर्योदय व सूर्यास्त के समय की पूजा शरीर के रक्त संचार को बेहतर बनाती है, जिससे रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ सकती है।

शरीर का शुद्धिकरण यह अनुष्ठान शरीर को विषमुक्त करने के साथ-साथ रोगों से लड़ने की शक्ति भी प्रदान करता है। भारत में भौगोलिक प्रासंगिकता यह मुख्य रूप से बिहार, झारखंड और उत्तरप्रदेश में मनाया जाता है, लेकिन दिल्ली, बेंगलुरू जैसे अन्य भारतीय शहरों में भी इसे हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है।अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्य यह त्योहार मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, अमरीका और इंग्लैंड सरीखे देशों में भारतीय मूल के लोगों और प्रवासी भारतीयों में भी मनाया जाता है।

कलकत्ता उच्च न्यायालय ने भाजपा नेता शुभेंदु अधिकारी के खिलाफ 15 प्राथमिकी रद्द की

प्रीति सिंह

कलकत्ता हाई कोर्ट ने बीते 24 अक्टूबर को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नेता और विपक्ष के नेता शुभेंदु अधिकारी के खिलाफ 2021 और 2022 के बीच पश्चिम बंगाल पुलिस द्वारा दर्ज की गई पंद्रह प्रथम सूचना रिपोर्ट (एफआईआर) को रद्द कर दिया। न्यायमूर्ति जय सेनगुप्ता ने इस मामले में पहले पारित अंतरिम आदेशों को भी रद्द कर दिया, जिसमें राज्य को न्यायालय की अनुमति के बिना अधिकारी के खिलाफ कोई और प्राथमिकी दर्ज करने से रोकने वाला आदेश भी शामिल था।अदालत ने अब अधिकारी को उनके खिलाफ दर्ज कई आपराधिक मामलों में राहत प्रदान कर दी है, साथ ही ऐसे मामलों को रद्द करने के लिए उनके द्वारा दायर दो याचिकाओं और एक संबंधित आपराधिक पुनरीक्षण आवेदन पर भी फैसला सुनाया है। कलकत्ता हाई कोर्ट में अधिकारी द्वारा दायर याचिकाओं में सोलह प्राथमिकी रद्द करने के निर्देश देने की मांग की गई थी।सोलह में से पंद्रह प्राथमिकी में, न्यायालय ने पाया कि या तो अधिकारी के विरुद्ध कोई विशिष्ट आरोप नहीं थे या फिर केस डायरी को प्रथम दृष्टया पढ़ने पर भी अधिकारी के विरुद्ध कथित अपराध सिद्ध नहीं हुए थे।अंतिम शेष प्राथमिकी में, न्यायालय ने पाया कि अधिकारी को अभी तक उस प्राथमिकी में अभियुक्त के रूप में नामित नहीं किया गया है जिसमें आरोप लगाया गया था कि कुछ लोगों ने फर्जी नौकरी रैकेट के तहत अधिकारी के नाम पर धन एकत्र करने की साजिश रची थी।इसलिए, न्यायमूर्ति सेनगुप्ता ने निष्कर्ष निकाला कि अधिकारी के विरुद्ध मामले में किसी भी प्राथमिकी को विशेष रूप से रद्द करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

पानागढ़ पुस्तक मेला 5 नवंबर से

पुस्तक प्रेमियों के लिए एक अनूठा साहित्यिक कार्यक्रम

নिज संवाददाता : पानागढ़ के साहित्यिक व सांस्कृतिक जगत में एक नया क्षितिज खुलने वाला है। इस साल, 'पानागढ़ बुक फेयर एंड लिटरेचर फेस्टिवल 2025' पहली बार आयोजित होने जा रहा है, जो 5 से 9 नवंबर तक मित्र संघ मैदान में होगा। स्थानीय शिक्षक संघ और साहित्य प्रेमियों की कमेटी की तरफ से आयोजित होने वाला यह पुस्तक मेला पहले से ही इलाके में उत्साह का केंद्र बन गया है। ऑर्गेनाइजिंग कमेटी की ओर से संयोजक और संपादक दीपांजन दास ने कहा कि यहां करीब 50 जाने-माने प्रकाशन संस्थाएं हिस्सा लेंगीं। यहां अलग-अलग तरह की किताबें होंगी, जैसे- साहित्य, बच्चों के मनोरंजन, शिक्षाप्रद, इतिहास, विज्ञान और कई दूसरे विषयों की किताबें शामिल हैं। मेले में किताबों की बिक्री के साथ-साथ हर दिन सांस्कृतिक कार्यक्रम, कविता पाठ, परिचर्चा सत्र और बच्चों और किशोरों के लिए अलग-अलग प्रतियोगिताएं भी होंगीं।मेले का एक आकर्षण मशहूर लेखकों और कवियों द्वारा आयोजित साहित्यिक चर्चा होगी, जहां नए लेखकों को भी अपनी रचनाएं पढ़ने का मौका मिलेगा। आयोजकों ने कहा कि किताब प्रेमियों के लिए मेले में प्रवेश पूरी तरह से फ़्री है और आने वाले मेहमानों के लिए सभी इंतज़ाम किए गए हैं। ज़ी बांग्ला के मशहूर गायक पर्नव बनर्जी, अंकन कुमार शि, शम्पा विश्वास, अरित्रा दासगुप्ता और माधुरी डे पुस्तक मेले के पांचों दिन शाम को मौजूद रहेंगे।पानागढ़ के लोगों को उम्मीद है कि यह पुस्तक मेला आने वाले दिनों में साहित्य और संस्कृति की प्रवृत्ति को और मज़बूत करेगा और शहर को किताब प्रेमियों के लिए एक नई जगह बनाएगा।

सोसायटी बेनिफिट सर्कल का दो दिवसीय चिकित्सा सेवा शिविर

निज संवाददाता : सोसायटी बेनिफिट सर्कल द्वारा छठ यात्रा के अवसर पर बाबू घाट स्थित श्री गंगेश्वर महादेव मंदिर परिसर में 27 अक्टूबर से दो दिवसीय निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर से सैकड़ों छठ व्रती एवं श्रद्धालु लाभान्वित हुए।शिविर में आने वाले श्रद्धालुओं के लिए प्राथमिक उपचार, स्वास्थ्य जांच तथा आवश्यक औषधियों की निःशुल्क व्यवस्था की गई। संस्था के स्वयंसेवकों एवं चिकित्सक दल ने पूरे सेवा भाव से शिविर का संचालन किया।संस्था के अध्यक्ष पवन बंसल ने बताया कि 29 अक्टूबर को (गोपाष्टमी के पावन अवसर पर) लिलुआ स्थित कोलकाता पिंजरापोल सोसाइटी गौशाला में एक दिवसीय निःशुल्क चिकित्सा एवं शिविर प्रातः 7 बजे से आयोजित किया गया।गोपाष्टमी के दिन बड़ी संख्या में आने वाले गौभक्तों को ध्यान में रखते हुए स्वास्थ्य जांच, औषधि वितरण एवं प्राथमिक उपचार की विशेष व्यवस्था की गई, जिससे अनेक श्रद्धालु लाभान्वित हुए।कोलकाता पिंजरापोल सोसाइटी के अध्यक्ष रमेश सरावगी ने शिविर स्थल पर पहुंचकर आयोजन का निरीक्षण किया एवं संस्था के सेवा कार्यों की सराहना की। शिविर के सफल संचालन में अध्यक्ष पवन बंसल, महेश काबरा, ताड़क नाथ गुप्ता, अरुण झुनझुनवाला एवं अनु मिश्रा का विशेष सहयोग रहा। अंत में अध्यक्ष पवन बंसल ने शिविर की सफलता में सहयोग देने वाले सभी श्रद्धालुओं, स्वयंसेवकों एवं चिकित्सक दल का हृदय से आभार व्यक्त किया।

आयुर्वेद : विज्ञान सम्मत विश्व की सबसे प्राचीनतम चिकित्सा प्रणाली

डॉ. अरविन्द सेठ (एम.डी.)

आयुर्वेद विश्व की सबसे प्राचीनतम चिकित्सा प्रणाली है। आयुर्वेद दो शब्दों से मिलकर बना है, आयु और वेद (विद् धातु से अर्थ जानना) अर्थात् आयु के लिए ज्ञान अथवा विज्ञान की जानकारी। धर्म, अर्थ एवं सुख (तत्कालीन एवं उत्तरकालीन दोनों प्रकार के) इन सभी का साधन आयु है। उस आयु की कामना करने वाले पुरुष को आयुर्वेद के उपदेश रुपी ज्ञान में परम आदर रखना चाहिए। विश्व की सबसे पुरानी पुस्तक ऋग्वेद है और ऋग्वेद का उपवेद आयुर्वेद है। प्रामाणिक पुस्तकों के अनुसार आयुर्वेद के प्राचीनतम विज्ञ पुरुष ब्रह्मा, दक्ष-प्रजापति, अश्विन द्वय, इंद्र, भारद्वाज, आत्रेय, पुनर्वसु, अग्निवेश, भेल, जतूकर्ण, पराशर, हारीत, क्षारपाणि, धन्वंतरि, ओषधेनव, वैतरण, औरभ्र, पोष्कलावत, करवीर्य, गोपुररक्षित, सुश्रुत आदि हुए।आयुर्वेद के विद्वानों को वैद्य की उपाधि दी जाती है।आयुर्वेद एक विस्तृत विज्ञान है जिसके निम्न 8 भाग हैं :

1. कायचिकित्सा (दवा)शरीर के सर्वाङ्ग में होने वाले ज्वर, रक्तपित्त, शोष, उन्माद, अपस्मार, कुष्ठ एवं अतिसार आदि रोगों की चिकित्सा का विधान जिसमें किया जाता है, आयुर्वेद के उस अंग को कायचिकित्सा कहते हैं।

2. कौमारभृत्य (बाल रोग) कुमार (बालक) के भरण-पोषण की व्यवस्था, धात्री-परीक्षा, दुष्ट दुग्ध विशोधन, ग्रहजन्य रोगों का प्रतिकार तथा बालकों के रोगों की चिकित्सा का विधान जिसमें किया जाता है, आयुर्वेद के उस अंग को कौमारभृत्य (बाल रोग) कहते हैं।

3. भूतविद्या (शैतानी दौरे का विज्ञान मनोविज्ञान)देवता, पितृ, पिशाच तथा ग्रह आदि के आक्रमण से पीड़ित व्यक्तियों के कष्ट को दूर करने के लिए, उन देव आदि के लिए बलि, उपहार, पूजा आदि के विधान के द्वारा रोग की शांति का उपाय जिसके द्वारा किया जाता है, आयुर्वेद के उस अंग को भूतविद्या कहते हैं।

4. शालाक्य (सुप्राक्लेविकुलर क्षेत्र से संबंधित रोगों का विज्ञान जैसे आंख, कान, नाक, मुंह, गला आदि) कर्ण, नेत्र, मुख, नासिका आदि जत्रु के ऊपर के अंगों में उत्पन्न हुए रोगों की शांति के लिए तथा शलाका यंत्र के प्रयोग के लिए जो आयुर्वेदाङ्ग होता है, उसे शालाक्यतंत्र कहते हैं।

5. शल्यतंत्र (शल्य चिकित्सा)अनेक प्रकार के घास, लकड़ी, पत्थर, धूलिकण, धातु (लोहा आदि), मिट्टी, हड्डी, केश, नख, पूय, आस्राव, मूढ़गर्भ आदि शारीरिक तथा आगंतुक शल्यों को निकालने के लिए यंत्र, शस्त्र, क्षारकर्म, अग्निकर्म के प्रयोग के लिए तथा विविध प्रकार के व्रणों का विनिश्चय करने के लिए शल्य नामक आयर्वेदाङ्ग प्रवृत्त होता है । इसे ही शल्यतंत्र कहते हैं।

6. अगदतंत्र (ज़हरज्ञान) :सर्प, कीट, लूता (मकड़ी) आदि से डसे हुए अनेक प्रकार के स्वाभाविक, कृत्रिम और संयोग विष से ग्रस्त मनुष्य की चिकित्सा के लिए जो अंग होता है, उसे अगदतंत्र कहते हैं। अगदतंत्र शब्द का प्रयोग सुश्रुत ने किया है। चरक ने इसे विषगरवरोधिकप्रशमन कहा है।

7. रसायनतंत्र (कायाकल्प का विज्ञान) दीर्घकाल तक तारुण्यावस्था-स्थापन करने के लिए आयु, बल तथा बुद्धि की वृद्धि के लिए एवं शरीर में रोग-प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाने के लिए जो आयुर्वेदांग है, उसे रसायनतंत्र कहते हैं।

8. वाजीकरण तंत्र (एफ्रोडिसियाक का विज्ञान) अल्पवीर्य, दुष्टवीर्य, क्षीणवीर्य एवं शुष्कवीर्य जनों में वीर्यपुष्टि, वीर्यशोधन, वीर्य-वृद्धि और वीर्योत्पादन करने के लिए तथा मैथुनेच्छा (प्रहर्ष) बढ़ाने के लिए जो आयुर्वेदांग है, उसे वाजीकरण कहते हैं।

चीनियों को भी पसंद है मछली-भात

जिनपिंग का देश बंगाल से मछली खरीदने पर दे रहा है ज़्यादा ज़ोर

निज संवाददाता : बंगालियों की तरह चीनियों को भी मछली-भात बहुत पसंद है। इसलिए चीन कोलकाता से चीनी झींगा समेत मछली के एक्सपोर्ट पर और भी ज़्यादा ध्यान दे रहा है। खासकर पिछले तीन सालों में कोलकाता और इस राज्य से चीन के अलग-अलग शहरों में मछली और झींगा एक्सपोर्ट की मात्रा और भी बढ़ रही है। ऐसा कोलकाता में चीनी दूतावास का दावा है।हाल ही में कोलकाता के चीनी दूतावास के अधिकारियों ने कोलकाता के 6 चैंबर ऑफ कॉमर्स के प्रतिनिधियों के साथ एक बैठक की।

चीनी कॉन्सल जनरल शू वेई ने बताया कि रविवार से ही कोलकाता से चीन के व्यापारिक शहर गुआंगज़ौ तक फ्लाइट शुरू हो रही है। अगले नवंबर में दिल्ली से शंघाई और गुआंगज़ौ तक भी फ्लाइट शुरू हो जाएंगी। इससे अब कोलकाता और देश के दूसरे शहरों से चीन जाना बहुत आसान हो जाएगा। कोलकाता के कई व्यापारियों ने चीनी दूतावास को बताया है कि वे चीनी कंपनियों के साथ काम करने के इच्छुक हैं। ओडिशा के कई व्यापारी भी चीन के साथ व्यापार और निवेश को लेकर आशावादी हैं। व्यापारियों के लिए आसानी से वीज़ा और सीधी फ्लाइट होने से ये सब करना और भी आसान हो जाएगा। चीनी कॉन्सल जनरल ने बताया कि इस साल, जनवरी से सितंबर तक भारत और चीन के बीच द्विपक्षीय व्यापार 115.2 बिलियन डॉलर रहा। हर साल यह मात्रा 10.9 फीसदी बढ़ रही है।इस साल कोलकाता में चीनी दूतावास ने 12,717 वीज़ा दिए हैं। यह संख्या पिछले साल से भी ज़्यादा है। चीन में भारत के अच्छी क्वालिटी के सामान की कद्र और मांग है। कोलकाता से चीन के अलग-अलग जगहों पर काफी मात्रा में मछली और झींगा एक्सपोर्ट किया जा रहा है। यह मात्रा हर साल बढ़ रही है, जो बहुत ही सकारात्मक बात है। चीनी दूतावास के अधिकारियों के अनुसार, अगर कोई कंपनी चीन में अच्छी और बेहतर क्वालिटी का सामान एक्सपोर्ट करना चाहती है, तो दूतावास एक पुल का काम कर सकता है। आम चीन के लोगों को बहुत पसंद है। अगर इस राज्य के व्यापारी चीन में आम एक्सपोर्ट करना चाहते हैं तो वे उनसे संपर्क कर सकते हैं। बिजनेस चैंबर के बिजनेसमैन के साथ सवाल-जवाब सेशन में चीनी दूतावास ने बताया कि चीन से भारत के अलग-अलग शहरों में फ्लाइट शुरू होने से भारत में चीनी टूरिस्ट की संख्या भी बढ़ेगी। उन्हें उम्मीद है कि भारत से भी ज़्यादा टूरिस्ट चीन जाएंगे।

आईक्यू सिटी मेडिकल कॉलेज अस्पताल बलात्कार कांड में चौंकाने वाले तथ्य सामने आए

निज संवाददाता : दुर्गापुर में आईक्यू सिटी मेडिकल कॉलेज अस्पताल बलात्कार कांड में सोमवार को चौंकाने वाले तथ्य सामने आए। पुलिस द्वारा टेस्ट आइडेंटिफिकेशन (टीआई) परेड की रिपोर्ट अदालत में पेश की गई, जिसके बाद पीड़िता के वकील पार्थ घोष ने दावा किया कि फिरदौस शेख इस मामले का मुख्य आरोपी और प्रत्यक्ष बलात्कारी है। बाकी पांच आरोपी भी इस जघन्य घटना में किसी न किसी तरह शामिल हैं, जिससे यह सामूहिक बलात्कार का मामला है।घटना 10 अक्टूबर की रात करीब 8 बजे की है, जब 23 वर्षीय मेडिकल की द्वितीय वर्ष की छात्रा अपने सहपाठी वासिफ अली के साथ खाना खाने निकली थी। कॉलेज कैंपस के पास शोभापुर में तीन युवकों ने उसे परानगंज जंगल में खींच लिया। इस दौरान उसका सहपाठी कॉलेज लौट गया। बाद में दो अन्य युवक वहां पहुंचे और पीड़िता के फोन से सहपाठी को वापस बुलाया गया। सहपाठी के पहुंचने पर आरोपियों ने उसे पीड़िता को कॉलेज भेजने के लिए कहा। कॉलेज पहुंचने के बाद पीड़िता ने कॉलेज प्रशासन को सूचित किया कि उसके साथ सामूहिक बलात्कार हुआ। इस घटना ने पूरे क्षेत्र में हड़कंप मचा दिया।सोमवार को दुर्गापुर सब-डिविजनल कोर्ट में पांच दिन की पुलिस हिरासत खत्म होने के बाद छह आरोपियों को पेश किया गया। इनमें नासिरुद्दीन शेख उर्फ सम्राट (23), अपू बाउरी (21), फिरदौस शेख (23), शेख रियाजुद्दीन उर्फ मंटू (32), शेख सफीकुल (27) और पीड़िता का सहपाठी वासिफ अली शामिल हैं। वकील पार्थ घोष ने टीआई परेड की रिपोर्ट खोलने की मांग की।

चैंबर आफ कामर्स की ओर से आसनसोल क्लब में एक भव्य और रंगारंग मिलन समारोह

निज संवाददाता : आसनसोल चैंबर आफ कामर्स की ओर से शनिवार देर शाम को आसनसोल क्लब में एक भव्य और रंगारंग मिलन समारोह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन दीप जलाकर आसनसोल दुर्गापुर विकास प्राधिकरण के चेयरमैन कवि दत्ता, आसनसोल रेलवे डिवीजन के सीनियर डीसीएम मार्शल ए.सिल्वा , आसनसोल चैंबर आफ कॉमर्स के सचिव शंभू नाथ झा, नरेश अग्रवाल, मुकेश तोदी आदि ने किया। इस दौरान एसबीएफसीआई महासचिव जगदीश बागड़ी, पीबीडीसीसीआई अध्यक्ष अजय खेतान, आसनसोल क्लब अध्यक्ष अमरजीत सिंह भरारा, सचिव शोभन नारायण बसु समेत विभिन्न चैंबर से आये प्रतिनिधियों को सम्मानित भी किया गया।शंभू नाथ झा ने बताया कि दुर्गा पूजा, दीपावली, काली पूजा और आगामी छठ पर्व के अवसर पर यह मिलन समारोह आयोजित किया गया चैंबर के सभी सदस्यों ने उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया वह सिर्फ एक बार चैंबर का अध्यक्ष बनना चाहते हैं, इसके बाद युवाओं के कंधे पर जिम्मेदारी सौंप देंगे।

प्रसेनजीत बनर्जी और ईस्ट केंदा खटाल पाड़ा के निवासियों के बीच विवाद तनावपूर्ण

निज संवाददाताः जामुड़िया: जामुड़िया थाना अंतर्गत केंदा फाड़ी इलाके में तृणमूल के भूतपूर्व ब्लॉक अध्यक्ष स्वर्गीय मुकुल बनर्जी तथा जिला परिषद सदस्या पुतुल बनर्जी के बेटे प्रसेनजीत बनर्जी और ईस्ट केंदा खटाल पाड़ा के निवासियों के बीच विवाद को लेकर शुक्रवार रात काफी तनावपूर्ण स्थिति देखने को मिली।काली पूजा की मूर्ति के ढांचे को लेकर विवाद उत्पन हुआ जो काफी जटिल स्थिति तक पहुंच गया।स्थानीय सूत्रों के मुताबिक काली पूजा मूर्ति का विसर्जन स्थानीय ईस्ट केंदा स्थित खेपा पोखर तालाब में विसर्जित किया गया था जिसका ढांचा छठ पूजा के लिए तालाब सफाई के दौरान बाहर छठ पूजा कमिटी के सदस्यों द्वारा बाहर निकल दिया गया था।वही ढांचा को ईस्ट केंदा खटाल के एक युवक द्वारा अपने घर लेजाने को लेकर पूरा बखेड़ा खड़ा हो गया।पहले चरण में, प्रसेनजीत ने इस बात पर विवाद किया कि ढांचे को तालाब से क्यों ले जाया गया और वित्तीय मुआवजे की मांग किया।वही वित्तीय मुआवजे की सहमति के बाजूद अवधि के पहले खटाल के निवासियों तथा एक महिला की पिटाई कर दिए जाने के कारण तनाव पैदा हो गया।वही घटना के बाद आपसी समझौता को लेकर ईस्ट केंदा स्थित तृणमूल कांग्रेस पार्टी कार्यालय में शुक्रवार शाम को बैठक के दौरान मामला और तुल पकड़ लिया जिसके बाद बचने के लिए प्रसेनजीत ने तृणमूल पार्टी कार्यालय में शरण ली लेकिन गुस्साए स्थानीय लोगों ने उसे घेर लिया और अपना गुस्सा जाहिर किया।घटना की सूचना पाकर पुलिस प्रशासन ने मौके पर पहुंचकर स्थिति को नियंत्रित किया।इस घटना के बहुत तनावपूर्ण स्थिति उत्पन्न हो गई।बाद में स्थिति को संभालने के लिए आसनसोल दुर्गापुर पुलिस कमिश्नरेट के एसीपी ध्रुव दास,सीआई सुशांतो चटर्जी,जामुड़िया थाना प्रभारी सोमेंद्रनाथ सिंह ठाकुर सहित उच्च पदस्थ पुलिस अधिकारी घटनास्थल पर शुक्रवार देर रात पहुँच गए थे। कॉम्बैट फोर्स और रैपिड एक्शन फोर्स का एक बड़ा बल मौके पर पहुंचा।वही पुलिस ने प्रोसेनजीत को हिरासत में लिया जिसके बाद उसको सजा देने की मांग करते हुए केंदा फाड़ी में विरोध प्रदर्शन किया गया। इस दौरान प्रदर्शनकारियों ने राष्ट्रीय राजमार्ग 60 को केंदा फाड़ी के पास अवरुद्ध कर दिया और घटना को लेकर पुलिस फाड़ी के सामने विरोध प्रदर्शन किया। फिलहाल घटनास्थल को लेकर काफी तनावपूर्ण स्थिति बनी हुई है तथा पूरे केंदा इलाके में जगह जगह पुलिस बल तैनात है।वही घटना की सूचना पाकर जामुड़िया विधायक हरेराम सिंह घटनास्थल पर पहुंच परिस्थिति का मुआयना करते हुए पुलिस प्रशासन को शांति श्रृंखला बनाए रखने का दिशानिर्देश दिया।

श्रीपुर मोड़ सर्विस रोड बना पार्किंग जोन

निज संवाददाताः जामुड़िया : जामुड़िया थाना अंतर्गत श्रीपुर फाड़ी के राष्ट्रीय राजमार्ग 19 के नींघा मोड़ से लेकर श्रीपुर मोड़ तक सर्विस रोड बना पार्किंग जोन, करीब महीनों तक बड़ी-बड़ी लोरियां और ट्रक खड़ी रहती है जिसके कारण सर्विस रोड के किनारे जितने भी होटल है उन लोगों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है कई बार तो देखा गया है कि सर्विस रोड जाम हो जाता है जिसके कारण कई बार दुर्घटनाएं भी घटित हुई है नींघ मोड़ से लेकर श्रीपुर मोड़ तक बड़ी-बड़ी लोरिया के द्वारा सब्जी और फल लोडिंग और अनलोडिंग इसी सर्विस रोड पर किया जाता है इस सर्विस रोड पर पिकअप वैन जिस पर मछली और पानी लोड रहता है बहुत ही तेज गति से गाड़ी चलाते हैं जिसके कारण कई दुर्घटनाएं घटी है परंतु फिर भी पिकअप वैन के ड्राइवर तेज गति पर कोई लगाम नहीं लगाते हैं सर्विस रोड पर दो ऐसे बड़े ट्रांसपोर्टर है जिनकी बड़ी-बड़ी लोरियां और ट्रक कई महीनो तक लगातार सर्विस रोड पर खड़ी रहती है इन ट्रांसपोर्टरों ने सर्विस सड़क को अपना पार्किंग जोन बना लिया है अपने मनमानी तरीके से सर्विस रोड पर गाड़ियों को जैसे तैसे खड़े कर देते हैं जिसके कारण रोजाना इस सर्विस रोड पर जाम की समस्या बनती है परंतु पुलिस प्रशासन की तरफ से इन लोगों पर कोई कार्रवाई नहीं की जाती जिनके कारण इनका मनोबल और भी बढ़ा हुआ है इस सर्विस रोड पर कई बार जाम होने के कारण सर्विस रोड से गुजरने वाले लोगों को कई घंटे तक खड़ा होना पड़ता है इस सर्विस रोड से कई स्कूल के बच्चों को लेकर स्कूल वैन इसी जाम में फंस जाती है जिसके कारण स्कूली बच्चों को कई घंटे तक खड़ा रहना पड़ता है परंतु फिर भी इन बड़े ट्रांसपोर्टरों को कोई फर्क नहीं पड़ता है इस सर्विस सड़क पर पिकअप वैन पर लदी मछलियां और पानी उसके बाद तेज गति से गाड़ी चलाना दुर्घटनाओं को संकेत दे रही है कभी भी इस सर्विस रोड पर बड़ी दुर्घटना घट सकती है तो इसका जिम्मेदार कौन होगा ट्रांसपोर्टर या प्रशासन ? बात घूम फिर के वहीं आती है कि इस सर्विस रोड पर अवैध पार्किंग जोन के कारण जनता को कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है और स्थानीय होटल जो सर्विस रोड के किनारे हैं उनको भी काफी दिक्कत हो रही है आखिर कब तक इस सर्विस रोड पर यह ट्रांसपोर्टर अवैध रूप से पार्किंग जोन बनाकर रखेंगे ?

अब अवैध कोयला खनन पर ईसीएल लगायेगा रोक

निज संवाददाताः मुख्यालय के संकल्प हॉल में ईसीएल के विभागाध्यक्ष (सुरक्षा) मेजर शरदेंदु तिवारी द्वारा सभी क्षेत्रीय सुरक्षा प्रभारियों की भागीदारी में एक सुरक्षा समन्वय बैठक 25 अक्टूबर, 2025 को आयोजित की गई, जिसका उद्देश्य परिचालन क्षेत्रों में सुरक्षा ढाँचे की समीक्षा और उसे सुदृढ़ करना था।बैठक में कोयला चोरी और अवैध खनन गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए एक सक्रिय दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया गया।
गहन और सुव्यवस्थित गश्त, बेहतर खुफिया जानकारी साझा करने और स्थानीय पुलिस व सीआईएसएफ इकाइयों के साथ घनिष्ठ समन्वय के माध्यम से जमीनी स्तर पर सतर्कता बढ़ाने पर विस्तृत विचार-विमर्श किया गया।मेजर तिवारी ने प्रभावी क्षेत्र कवरेज और किसी भी अप्रिय घटना पर त्वरित प्रतिक्रिया सुनिश्चित करने के लिए ड्रोन निगरानी, सीसीटीवी-आधारित पर्यवेक्षण और रीयल-टाइम संचार प्रणालियों सहित आधुनिक निगरानी तकनीकों का लाभ उठाने के महत्व पर प्रकाश डाला।सभी क्षेत्रीय सुरक्षा प्रभारियों को किसी भी अवैध गतिविधि का शीघ्र पता लगाने, उसे रोकने और उसके विरुद्ध त्वरित हस्तक्षेप सुनिश्चित करने हेतु एक कार्य-उन्मुख रणनीति लागू करने का निर्देश दिया गया। विभागाध्यक्ष (सुरक्षा) ने कोयला चोरी और अवैध खनन के प्रति ईसीएल की शून्य-सहिष्णुता नीति को दोहराया और कंपनी की परिसंपत्तियों की सुरक्षा के लिए प्रौद्योगिकी-संचालित, अनुशासित और समन्वित सुरक्षा दृष्टिकोण अपनाने पर जोर दिया।

A.G. चर्च स्कूल की साख पर उठा सवाल

निज संवाददाताः आसनसोल शहर के प्रतिष्ठित .. चर्च स्कूल में एडमिशन के नाम पर चल रहे कथित घोटाले ने अब तूल पकड़ लिया है। पहले जहां पुलिस ने कथित एजेंट जूता कारोबारी इंतखाब उर्फ 'लोटस' को गिरफ्तार किया था, वहीं अब स्कूल की कर्मी सबरीना लकड़ा को भी बीते 22 अक्टूबरको गिरफ्तार कर लिया गया है। इस मामले ने स्कूल प्रशासन और अभिभावकों के बीच खलबली मचा दी है। इसके साथ है यह चर्चा भी जोर पकड़ने लगी कि अब अगला नंबर किसका ?मामला क्या है?सूत्रों के अनुसार, .. चर्च स्कूल में एडमिशन के लिए भारी रकम लेकर सीट दिलाने का आरोप सामने आया है। स्कूल प्रबंधन के दो गुटों के बीच लंबे समय से चला आ रहा टकराव इस मामले को और जटिल बना रहा है। एक गुट () ने आसनसोल नॉर्थ थाना में एफआईआर दर्ज कराई थी, जिसके बाद एजेंट लोटस की गिरफ्तारी हुई। अब स्कूल की कर्मी सबरीना लकड़ा को 22 अक्टूबर 2025 की सुबह गिरफ्तार किया गया।सबरीना लकड़ा, जो क्वार्टर /8, श्रीनगर (आसनसोल नॉर्थ थाना क्षेत्र) की निवासी हैं, के खिलाफ केस नंबर 481/2025 के तहत एक्ट की धाराओं 318(4)/316(2)/338/336(3)/340(2)/61(2) के तहत मामला दर्ज किया गया है।जांच में बड़े खुलासेपुलिस और स्कूल की जांच कमेटी (जिसमें रेव. जॉर्ज कुट्टी, जॉयस देवदास और एडवोकेट विश्वदेव चटर्जी शामिल थे) ने पांच छात्राओंमाहीरा , अलीज़ा , तंज़िला , अनीज़ा और वानिया के एडमिशन में अनियमितताएं पाईं। जांच में पता चला कि इन के अभिभावकों से मोटी रकम वसूली गई, और यह सब एजेंट लोटस के जरिए हुआ, जो स्कूल के अंदरूनी नेटवर्क से जुड़ा था। एफआईआर में स्कूल की हेडमिस्ट्रेस , सबरीना लकड़ा, स्टाफ निबेदिता चक्रवर्ती और तपेंद्रनाथ दास के नाम भी हैं। पुलिस अब बैंक ट्रांजैक्शन और कॉल रिकॉर्ड्स की जांच कर रही है, जिससे और बड़े खुलासे होने की संभावना है।अभिभावकों में आक्रोशइस घोटाले ने अभिभावकों में गुस्सा पैदा कर दिया है। एक अभिभावक ने कहा, ''बच्चों की पढ़ाई अब बिजनेस बन चुकी है। अगर स्कूल जैसे संस्थानों में भी पैसे लेकर एडमिशन हो, तो भरोसा कहां रहेगा?'' अभिभावकों का कहना है कि स्कूल प्रबंधन को इस मामले में पारदर्शिता बरतनी चाहिए।प्रबंधन के दो गुट आमने-सामनेस्कूल प्रबंधन के दो गुट इस मामले में एक-दूसरे के खिलाफ खड़े हैं। एक गुट का कहना है कि जांच पूरी होने से पहले एफआईआर दर्ज करना जल्दबाजी थी, जबकि दूसरा गुट दावा करता है कि ''गिरफ्तारी के बाद सच्चाई सामने आ रही है और आगे भी बड़े खुलासे होंगे।''पुलिस की सक्रियताआसनसोल नॉर्थ थाना पुलिस ने इस मामले को ''शहर की शिक्षा व्यवस्था से जुड़ा संवेदनशील मामला'' बताया है। पुलिस का कहना है कि सभी संबंधित लोगों से पूछताछ जारी है और जांच के दौरान और नाम सामने आ सकते हैं।स्कूल प्रशासन में हड़कंपसबरीना लकड़ा की गिरफ्तारी के बाद स्कूल प्रशासन में हड़कंप मच गया है। अभिभावक और स्थानीय लोग इस मामले पर कड़ी नजर रखे हुए हैं। यह मामला न केवल .. चर्च स्कूल की साख पर सवाल उठा रहा है, बल्कि निजी स्कूलों में एडमिशन प्रक्रिया की पारदर्शिता पर भी बहस छेड़ रहा है।पुलिस और जांच कमेटी की कार्रवाई से इस घोटाले के और तार उजागर होने की उम्मीद है। इस बीच, अभिभावक स्कूल प्रबंधन से जवाबदेही और सख्त कार्रवाई की मांग कर रहे हैं।

अग्निमित्रा पॉल ने शत्रुघ्न सिन्हा की आलोचना की, उन्हें छठ उत्सव के दौरान गायब रहने वाला ''प्रवासी सांसद'' कहा

आसनसोलः बंगाल के कोयला क्षेत्र में दुर्गा पूजा, काली पूजा और छठ पूजा के त्योहारी उत्साह के बीच, आसनसोल दक्षिण से भाजपा विधायक अग्निमित्रा पॉल ने तृणमूल कांग्रेस सांसद शत्रुघ्न सिन्हा पर तीखा कटाक्ष किया और उन्हें ''प्रवासी सांसद'' कहा जो प्रमुख त्योहारों के दौरान अपने निर्वाचन क्षेत्र से गायब रहते हैं।पॉल ने कहा, ''मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने आसनसोल को एक प्रवासी सांसद का तोहफा दिया है। जब यूपी, बिहार और झारखंड से लोग अपने परिवारों के साथ छठ मनाने के लिए यहां आ रहे हैं, तो हमारे सांसद कहीं नजर नहीं आ रहे हैं। हमने भवानी भवन में भी यह जानने की कोशिश की कि हमारे सांसद कहां हैं। अगर वह अच्छे और बुरे समय में हमारे साथ नहीं खड़े हो सकते हैं, तो आसनसोल के लोगों को उनसे क्या उम्मीद करनी चाहिए?''अपनी आलोचना का विस्तार करते हुए, उन्होंने पड़ोसी बर्धमान-दुर्गापुर निर्वाचन क्षेत्र से टीएमसी सांसद कीर्ति आज़ाद पर भी निशाना साधा और उन्हें ''एक और प्रवासी सांसद'' कहा। पॉल ने टिप्पणी की, ''जब पड़ोसी राज्य ओडिशा की एक महिला के साथ बलात्कार हुआ, तो कीर्ति आज़ाद कहीं नहीं मिले।''भाजपा विधायक ने आगे तृणमूल कांग्रेस के दोहरे मानदंडों पर सवाल उठाते हुए कहा, ''जब टीएमसी सरकार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को बाहरी बताती है, तो बंगाल के बाहर से लाए गए इन दो प्रवासी सांसदों के बारे में क्या?''पॉल ने जोर देकर कहा कि आसनसोल के लोग उम्मीद करते हैं कि उनके निर्वाचित प्रतिनिधि उत्सव और संकट दोनों में उनके साथ खड़े रहेंगे। उन्होंने आगे कहा, ''दुर्भाग्य से, हमारे सांसद पूरे क्षेत्र में मनाए जा रहे सबसे बड़े त्योहार के दौरान भी गायब हैं।''

आसनसोल रेलपार चिटफंड घोटाला: मुख्य आरोपी तहसीन अहमद को 10 दिनों की पुलिस हिरासत

निज संवाददाताः आसनसोलः रेलपार इलाके के चर्चित चिटफंड घोटाले के मुख्य आरोपी तहसीन अहमद को आसनसोल नॉर्थ थाना पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। रविवार को पुलिस ने उसे आसनसोल कोर्ट में पेश किया कोर्ट ने तहसीन को 10 दिनों की पुलिस रिमांड में भेज दिया सूत्रों के अनुसार, तहसीन अहमद के पास से तकरीबन 250 ग्राम सोना, भारी मात्रा में चांदी के गहने और कुछ नकदी बरामद की गई है। हालांकि, इन बरामदियों की आधिकारिक पुष्टि फिलहाल नहीं हुई है।पुलिस ने आरोपी को कोर्ट में पेश कर 14 दिनों रिमांड की मांग कोर्ट ने 10 दिनों की पुलिस रिमांड दी, ताकि उससे आगे की पूछताछ की जा सके और घोटाले में शामिल अन्य लोगों तक पहुंचा जा सके।बताया जा रहा है कि तहसीन अहमद पिछले कई वर्षों से आसनसोल रेलपार इलाके में चिटफंड कारोबार के नाम पर सैकड़ों लोगों से करोड़ों रुपये की ठगी कर चुका है। पुलिस अब इस पूरे नेटवर्क की जांच में जुट गई है। वही इस मामले में आसनसोल दक्षिण की विधायक अग्निमित्र पालने राज्य सरकार और पुलिस पर काफी गंभीर आरोप लगाए हैं उन्होंने कहा कि अब तक इन्हीं की निगरानी शाह पर कैसे चिट फंड का धंधा चल रहा था इस तरह के कई सवाल अग्निमित्रा पाल ने खड़े किए हैं।

एक करोड़ लॉटरी विजेता की हत्या मामले में तृणमूल की पूर्व बोरो चेयरमैन और उसका भाई गिरफ्तार

निज संवाददाताःपश्चिम बंगाल आसनसोल के कुलटी विधानसभा मे स्थित लखियाबाद अपर पाड़ा वार्ड संख्या 67 इलाके मे मंगलवार सुबह इलाके के ही पूर्व तृणमूल बोरो चेयरमेन बेबी बाउरी के घर के बाहर दरवाजे के ठीक सामने सीढ़ी पर लहु लहान अधमरा अवस्था मे पाए गए एक करोड़ के लॉटरी विजेता कार्तिक बाउरी को लेकर पुरे दिन हंगामा चला, आनन -फानन मे कार्तिक बाउरी के परिजन कार्तिक बाउरी को इलाज के लिये आसनसोल जिला अस्पताल तो लेकर आए पर अस्पताल मे चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया, जिसके बाद से कार्तिक के परिजन कार्तिक की हत्या का आरोप इलाके की रहने वाली तृणमूल की पूर्व बोरो चेयरमेन बेबी बाउरी, अमरदीप बाउरी, संदीप बाउरी सहित ज्योत्स्ना बाउरी के ऊपर लगा रहे थे, जिसको लेकर उन्होंने एक लिखित शिकायत भी बराकर पुलिस फाड़ी मे दर्ज करवाई थी,।जिसमे उन्होंने कार्तिक की हत्या के पीछे इन चारों के हाँथ होने की बात कही है, वहीं शिकायत पत्र मे उन्होंने यह भी लिखा है की घटना के दिन अमरदीप बाउरी घर से यह कहकर निकला था की अमरदीप बाउरी ने उसको अपने घर बुलाया है, उसने यह भी कहा था की वह उससे मिलकर सीधा घर आएगा, काफ़ी देर हो जाने के बाद भी जब वह वापस नही आया तब वह उसको बुलाने के लिये अमरदीप बाउरी के घर की ओर गई, तभी कार्तिक की चीखने

और चिल्लाने की आवाज सुनाई दी, जब वह अमरदीप के घर पहुँची तो घर के बाहर दरवाजे के सामने सीढ़ियों पर कार्तिक लहूलहान अधमरा अवस्था मे पड़ा है, जिसके बाद वह भी जोर -जोर से चिल्लाने लगी, चीखने और चिलाने की आवाज सुन मौके पर भारी संख्या मे स्थानीय लोगों की भीड़ उमड़ गई, ।लोगों की भीड़ देख बेबी बाउरी ने कहा की कार्तिक उसके घर मे चोरी के इरादे से घुसा था और जब उन्होंने उसे देख लिया तो वह भागकर उनके घर का दीवार फांदकर निकलने की कोसिस मे सीढ़ी पर जा गिरा, इसके आगे वह कुछ नही जानते, जबकि कार्तिक की माँ ने भीड़ के सामने कहा की उसके बेटे को पाँच महीना पहले ही एक करोड़ रुपए का लॉटरी लगा है, ऐसे मे उसको पैसे की क्या जरुरत की वह चोरी करने जाएगा, उसकी हत्या की गई है और उस हत्या के पीछेतृणमूल की पूर्व बोरो चेयरमेन बेबी बाउरी, अमरदीप बाउरी, संदीप बाउरी सहित ज्योत्स्ना बाउरी शामिल है, उन्होंने उसकी हत्या क्यों की क्या कारन था इसका खुलासा वह खुद करेंगे, कार्तिक की माँ न्याय के लिये अड़ गई, वहीं कार्तिक की माँ सबिता बाउरी के द्वारा दिए गए लिखित शिकायत के आधार पर पुलिस मामले की जाँच करते हुए तृणमूल के पूर्व बोरो चेयरमेन बेबी बाउरी और अमरदीप बाउरी को गिरफ्तार कर लिया है, बाकि के अन्य दो आरोपी संदीप बाउरी और ज्योत्स्ना बाउरी अब भी फरार बताए जा रहे हैं, जिनकी बहोत ही जल्द गिरफ़्तारी कर लिए जाने की बात पुलिस कर रही है ।

मध्यप्रदेश में औद्योगिक प्रगति की नई उड़ान

तनमय जैन

एमएसएमई क्षेत्र बना विकास का आधारस्तंभ

भोपाल : मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश आज औद्योगिक विकास की नई ऊंचाइयों की ओर अग्रसर है। राज्य सरकार विनिर्माण क्षेत्र में नई इकाइयों की स्थापना को हर संभव प्रोत्साहन दे रही है। सरकार के दूरदर्शी निर्णयों और निवेश-हितैषी नीतियों के परिणामस्वरूप प्रदेश में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई) क्षेत्र निरंतर विस्तार कर रहा है।वर्तमान में मध्यप्रदेश में 20.43 लाख एमएसएमई इकाइयां सक्रिय हैं। इनमें से 20.22 लाख सूक्ष्म उद्यम, 19,508 लघु उद्योग, और 1,178 मध्यम उद्यम हैं। यह आंकड़े न केवल प्रदेश की औद्योगिक सशक्तता को दर्शाते हैं, बल्कि यह भी प्रमाणित करते हैं कि छोटे उद्योग राज्य की अर्थव्यवस्था की रीढ़ बन चुके हैं।एमएसएमई क्षेत्र की विविधता इसकी सबसे बड़ी ताकत है। इस क्षेत्र में 21 फीसद इकाइयां विनिर्माण श्रेणी की हैं, जो उत्पादन और निर्माण से जुड़ी हैं। वहीं 29 फीसद इकाइयां सेवा श्रेणी में कार्यरत हैं, जो तकनीकी, परामर्श, परिवहन और अन्य सेवाओं के माध्यम से अर्थव्यवस्था को गति देती हैं। सबसे बड़ी हिस्सेदारी 50 फीसद इकाइयों की व्यवसाय श्रेणी में है, जो व्यापार और वितरण के क्षेत्र में सक्रिय हैं।यह संतुलित औद्योगिक संरचना राज्य के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में लगभग 30 फीसद का योगदान दे रही है, जो किसी भी राज्य की औद्योगिक क्षमता का सशक्त प्रमाण है।वर्तमान में एमएसएमई सेक्टर में 66 हजार करोड़ रुपए से अधिक का निवेश हुआ है, जिससे प्रदेश के औद्योगिक परिदृश्य में उल्लेखनीय परिवर्तन आया है। यह निवेश न केवल आर्थिक वृद्धि को प्रोत्साहित कर रहा है, बल्कि एक करोड़ से अधिक लोगों को रोजगार भी प्रदान कर चुका है।मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के प्रयासों से अब प्रदेश में उद्योग लगाने की प्रक्रिया और भी सरल, पारदर्शी और निवेशकों के लिए अनुकूल बनाई गई है। नई औद्योगिक नीतियां, बुनियादी ढांचे का विकास, कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम और स्थानीय संसाधनों का समुचित उपयोग, ये सभी पहलें मिलकर मध्यप्रदेश को भारत का उभरता औद्योगिक हब बना रही हैं।एमएसएमई क्षेत्र केवल रोजगार और उत्पादन का माध्यम नहीं, बल्कि आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश के निर्माण की आधारशिला है। राज्य सरकार के सतत प्रयासों और उद्यमियों के समर्पण से मध्यप्रदेश अब ''मेक इन इंडिया'' के विजन को साकार करने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है।

रवींद्रनाथ टैगोर के पैतृक निवास 'पथेर पुरी' को पूर्ण संग्रहालय का रूप देगी ओडिशा सरकार

निज संवाददाता : यात्रा प्रेमियों की भावनाओं का केंद्र पुरी अब एक और ऐतिहासिक गौरव से जगमगाने जा रहा है। ओडिशा सरकार ने निर्णय लिया है कि कविगुरु रवींद्रनाथ टैगोर के पैतृक निवास 'पथेर पुरी' को एक पूर्ण संग्रहालय (म्यूज़ियम) के रूप में विकसित किया जाएगा। ओडिशा के भाषा, साहित्य और संस्कृति विभाग की पहल पर कई उच्चस्तरीय बैठकों के बाद यह निर्णय लिया गया है। विभाग की ओर से बताया गया है कि भवन का रखरखाव, पुनर्निर्माण और साज-सज्जा इस तरह की जाएगी कि दर्शक उसमें प्रवेश करते ही कविगुरु के जीवन, कार्य और सृजन की अनुभूति कर सकें। 'पथेर पुरी' एक समय में ठाकुर परिवार का पैतृक निवास था। रवींद्रनाथ टैगोर की अनेक स्मृतियां इस भवन से गहराई से जुड़ी हुई हैं। अब तक यह केवल एक विरासत के प्रतीक के रूप में जाना जाता था, लेकिन अब यह स्मृति और संस्कृति का एक जीवंत केंद्र बन जाएगा। संग्रहालय के रूप में पुनर्गठन के बाद यहां नियमित प्रदर्शनियां, संरक्षण और रखरखाव की विशेष व्यवस्था होगी। आगंतुक यहां रवींद्रनाथ टैगोर के व्यक्तिगत जीवन के विविध पहलुओं, साहित्य साधना और पुरी से जुड़ी उनकी अनमोल स्मृतियों को प्रत्यक्ष देख सकेंगे। ओडिशा सरकार की इस पहल से पुरी एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक पर्यटन केंद्र के रूप में उभरने जा रही है। जगन्नाथ मंदिर और समुद्र तट के साथ अब पर्यटकों को आकर्षित करेगा कविगुरु की स्मृतियों से जुड़ा यह संग्रहालय। यानी यात्रा प्रेमी और साहित्य प्रेमियों के लिए पुरी अब एक नए रूप में रवींद्रनाथ की उपस्थिति को साकार करेगा जहां भक्ति, साहित्य और इतिहास एक समान धारा में मिलते हैं।

शादी की अनोखी परंपराएं: जूते या मछली से पीटते हैं दूल्हे को

निज संवाददाता : दुनिया में शादी की कुछ परंपराएं ऐसी हैं जो बेहद खतरनाक और अजीब मानी जाती हैं। ऐसी ही एक परंपरा दक्षिण कोरिया की है। इस रस्म में शादी के बाद जब दूल्हा और दुल्हन अपने नए घर पहुंचते हैं, तो दूल्हे के पैरों को रस्सी से बांध दिया जाता है। उसके दोस्त और रिश्तेदार उसे जूतों या मछली से पीटते हैं। यहां की परंपरा को ''बोक-जोरी'' या ''जेओक-चेओल'' कहा जाता है, जिसका अर्थ है ''पैर की कोड़ाबंदी।'' माना जाता है कि इस प्रक्रिया से दूल्हे की सहनशक्ति और शादीशुदा जीवन में मजबूती परखी जाती है। पुराने समय में दुल्हन को दूल्हे को बचाने के लिए पैसा देना पड़ता था। इस रस्म में कभी-कभी दूल्हे को गंभीर चोटें भी लग जाती थीं। हालांकि, अब इसे ज्यादातर हंसी-खुशी और मनोरंजन की रस्म के रूप में निभाया जाता है। सिर्फ दक्षिण कोरिया ही नहीं, दुनिया के अन्य हिस्सों में भी अजीब शादी की परंपराएं मौजूद हैं। स्कॉटलैंड में ''ब्लैकनिंग'' रस्म होती है। इसमें दूल्हा और दुल्हन को शादी से पहले सार्वजनिक रूप से सड़क पर ले जाकर कीचड़, सड़े अंडे, आटा, सिरप और पंख फेंके जाते हैं। यह माना जाता है कि यह बुरी आत्माओं को भगाने और शादी की चुनौतियों के लिए तैयारी करने का तरीका है। चीन के तुजिया समुदाय में दुल्हन को शादी से एक महीने पहले रोज़ाना रोना पड़ता है। उसकी मां और दादी भी इस प्रक्रिया में शामिल होती हैं। इसे ''रोने का गीत'' कहा जाता है। यह रस्म दुल्हन के परिवार से विदाई और भावनात्मक तैयारी का प्रतीक मानी जाती है। माना जाता है कि अगर दुल्हन सही से नहीं रोएगी, तो समाज में उसकी आलोचना होगी। इंडोनेशिया में युवाओं के ऊपरी दांतों को घिसकर समतल किया जाता है। ऐसा माना जाता है कि इस प्रक्रिया से व्यक्ति के अंदर छिपी छह बुराइयां काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और ईर्ष्या दूर होती हैं। नीदरलैंड में शादी से पहले दूल्हा और दुल्हन को जंगल में ले जाकर पेड़ काटने का काम करना होता है। इसे जीवन की चुनौतियों का सामना एकजुट होकर और टीम वर्क के साथ करने का प्रतीक माना जाता है। मॉरिटानिया में दुल्हन को शादी से पहले मोटा किया जाता है। वहां वसायुक्त आहार के जरिए उसे अधिक वजन दिया जाता था, क्योंकि मोटापा सुंदरता, धन और समृद्धि का प्रतीक माना जाता था।हालांकि, स्वास्थ्य जागरूकता के कारण यह प्रथा अब कम होती जा रही है। इन परंपराओं में दर्द, साहस, प्रतीकात्मकता और सांस्कृतिक मान्यताओं का मिश्रण देखने को मिलता है। चाहे दक्षिण कोरिया की खतरनाक बोक-जोरी हो, चीन की ''रोने का गीत'' परंपरा, स्कॉटलैंड का कीचड़ और सड़े अंडों वाला समारोह, इंडोनेशिया के दांत घिसने की प्रथा या मॉरिटानिया में दुल्हन को मोटा करने की रस्म, ये सभी रीति-रिवाज सिर्फ शादी का उत्सव नहीं, बल्कि जीवन की चुनौतियों, सामाजिक विश्वासों और सांस्कृतिक प्रतीकों का भी हिस्सा हैं।

पटरियों पर हाथियों की मौत का सिलसिला रोकने को रेलवे को नयी पहल

निज संवाददाता : बढ़ी हुई सतर्कता के बावजूद अलीपुरद्वार रेलवे लाइन पर हाथियों की मौत का सिलसिला थमता नहीं दिख रहा है। एक महीने पहले ट्रेन की चपेट में आने से एक हाथी की जान चली गई थी। बार-बार ऐसे हादसे होने के बाद, रेलवे अधिकारियों ने अब एक नई पहल की है। नॉर्थ ईस्ट फ्रंटियर रेलवे अपने पूरे नेटवर्क में इंटूज़न डिटेक्शन सिस्टम या आईडीएस लगा रहा है। सरल भाषा में इसे घुसपैठ का पता लगाने वाली प्रणाली कह सकते हैं। यह एक ऐसी टेक्नोलॉजी है जो ट्रेन चलने से पहले रेलवे लाइन पर जंगली जानवरों की मौजूदगी का पता लगाएगी और ड्राइवर को चेतावनी देगी।इस प्रोजेक्ट के लिए कुल 77 करोड़ रुपये दिए गए हैं। इसका मुख्य लक्ष्य हाथियों के कॉरिडोर और जंगलों से गुजरने वाली रेलवे लाइन पर जान का नुकसान रोकना है। यह सेंसर सिस्टम नॉर्थ ईस्ट फ्रंटियर रेलवे के अलग-अलग सेक्शन में ट्रायल बेसिस पर पहले ही शुरू किया जा चुका है। परियोजना का पहला चरण अलीपुरद्वार डिवीज़न के मदारीहाट-नागराकाटा सेक्शन, लामडिंग डिवीज़न के हबीपुर-लामसाखांग-पथरखोला-लामडिंग रूट, रंगिया डिवीज़न की कामाख्या-अजारा-मिर्ज़ा लाइन और तिनसुकिया डिवीज़न के टीटाबर-मरियोनी-नक्खारी सेक्शन में सफलतापूर्वक चल रहा है।नॉर्थ-ईस्ट फ्रंटियर रेलवे के सूत्रों के मुताबिक, पहले चरण में हाथी कॉरिडोर के कुल 64.03 किमी और दूसरे 141 किमी ब्लॉक सेक्शन में आईडीएस लगाया गया है।

अजब-गजब

खेलती हुई बच्ची को देखकर मां के उड़ गए होश

हाथ में था सांप, जेब में थी हैरान करने वाली चीज!

निज संवाददाता : बच्चे कितने शरारती होते हैं ये तो सब जानते हैं। उनकी शरारतों की कोई सीमा नहीं होती। वो अक्सर ऐसी चीजें कर जाते हैं कि बड़े देखकर हैरान हो जाते हैं। हाल ही में एक बच्ची ने भी अपनी मां को हैरान कर दिया। वो बाहर खेल रही थी। जब वो अंदर आई तो उसे देखकर मां के होश उड़ गए क्योंकि उसके एक हाथ में सांप था और उसकी जेब में भई एक हैरान करने वाली चीज थी जो एक जीव था। बच्चों की जिज्ञासा अक्सर माता-पिता को चौंका देती है। कभी वे खिलौनों को खोलकर देखते हैं तो कभी मिट्टी में खजाने खोजते हैं लेकिन अमेरिका के नॉर्दर्न कैलिफोर्निया की एक मां एमी के साथ जो हुआ, उसने सोशल मीडिया पर लोगों को हैरान और हंसी से लोटपोट कर दिया। एमी ने अपनी छोटी बेटी जॉनी की जेबें जांचीं और उनमें जो मिला, उसने हर किसी को हैरान कर दिया। जेबों में थे जिंदा मेंढक और सांप! एमी ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट _'' पर एक वीडियो शेयर किया, जिसमें उनकी बेटी बाहर खेलने के बाद बिना जूते-चप्पल पहने डंगरी पहने खड़ी नजर आ रही है। वीडियो की शुरुआत में एमी पूछती है, तुम्हारी जेबों में कितने जानवर हैं? फिर शुरू होता है असली सरप्राइज़।

बच्ची की जेब में मिला सांपजॉनी गर्व से अपने दोनों हाथ आगे बढ़ाती है। एक हाथ में उसने मेंढक पकड़ा हुआ है और दूसरे में सांप। वीडियो देखकर साफ पता चलता है कि सांप एक सामान्य गार्टर स्नेक है, जो इंसानों के लिए हानिकारक नहीं होता। एमी पहले तो मुस्कराती हैं, फिर सावधानी से बेटी की जेबें जांचने लगती हैं और वहां जो मिला, उसने सबको दंग कर दिया। उनकी डंगरी की बड़ी जेब में एक और सांप था, जबकि दोनों साइड पॉकेट्स में भी छोटे-छोटे सांप निकले। यानी कुल मिलाकर जॉनी ने तीन सांप और एक मेंढक अपने साथ 'पालतू' की तरह जेबों में रखे थे।

युवक ने प्रेमिका को छोड़ एआई को बना लिया गर्लफ्रेंड!

निज संवाददाता : प्यार और रिश्तों की दुनिया में हर दिन कुछ न कुछ अजीबो-गरीब किस्से सामने आते रहते हैं। कभी कोई अपने पार्टनर का झूठ पकड़ लेता है, तो कभी किसी की बेवफाई चर्चा का विषय बन जाती है। लेकिन इस बार जो मामला सामने आया है, वह वाकई हैरान कर देने वाला है। एक लड़की को तब गहरा झटका लगा जब उसे पता चला कि उसका बॉयफ्रेंड उससे नहीं, बल्कि उसके ही एआई वर्जन से घंटों बातें करता रहता है!

यह हैरान कर देने वाली घटना रेडिट पर शेयर की गई, जहां 19 साल की ऐलीन ने अपने बॉयफ्रेंड के बारे में ऐसा खुलासा किया जिसने सभी को चौंका दिया। उसने बताया कि उसका 21 साल का पार्टनर हमेशा बहुत ''केयरिंग, स्वीट और लॉयल'' था। उनके बीच कभी बड़ी बहस नहीं हुई, और रिश्ता बिल्कुल परफेक्ट लग रहा था। लेकिन एक दिन ऐलीन को ऐसा सच पता चला, जिसने उसके होश उड़ा दिए। उसे एहसास हुआ कि उसका बॉयफ्रेंड उससे नहीं, बल्कि किसी और से बात कर रहा है। जब उसने सच्चाई जानी, तो पता चला कि वह किसी इंसान से नहीं, बल्कि उसके ही एआई वर्जन से बातें करता है और वह भी रोजाना लगभग 4 घंटे तक!ऐलीन ने बताया कि उसका बॉयफ्रेंड काफी टेक-सेवी है और उसने खुद का एक एआई चैटबॉट बनाया है। लेकिन वह चैटबॉट कोई आम चैटबॉट नहीं था उसने अपने रिश्ते की हर बात, हर मैसेज, हर बातचीत को इस्तेमाल करके इस चैटबॉट को ऐलीन की तरह सोचने और बोलने के लिए ट्रेन किया था। उसने इस चैटबॉट का नाम रखा था ''mama and johnnys daily play''। जब असली ऐलीन ने इसे टेस्ट किया, तो वह दंग रह गई। चैटबॉट की बातें, टोन, और रिएक्शन बिल्कुल उसी के तरह थे। उसे ऐसा लगा मानो वह खुद से बात कर रही हो, लेकिन एक मशीन के रूप में! ऐलीन के मुताबिक, उसने महसूस किया कि पिछले छह महीनों से उसका बॉयफ्रेंड बहुत ''एक्स्ट्रा स्वीट'' और उसकी हर बात को मानने लगा था। वह कभी झगड़ा नहीं करता, हर बात पर ''सॉरी'' कह देता और हर चीज में अपने आप को गलती और ऐलीन को सही ठहराता था। अब उसे शक है कि वह ऐसा इसलिए कर रहा था ताकि वह उसके एआई वर्जन को बेहतर ट्रेन कर सके यानी उसकी डिजिटल कॉपी को परफेक्ट ''गर्लफ्रेंड'' बना सके। ऐलीन ने रेडिट पर लिखा-अब मुझे समझ नहीं आ रहा कि यह इमोशनल चीटिंग है या कुछ और क्या वह मुझे धीरे-धीरे मेरे ही एआई से बदल रहा है? यह हैरान कर देने वाला पोस्ट ने रेडिट पर बवाल मचा दिया। लोगों ने इसपर जमकर अपनी प्रतिक्रियाएं दी। एक यूजर ने लिखा-ये नॉर्मल नहीं है, लड़की को तुरंत रिश्ता खत्म कर देना चाहिए। यह एक डिस्टर्बिंग और खतरनाक हरकत है। दूसरे यूजर ने लिखा-यह इमोशनल चीटिंग से भी आगे की बात है। यह एक मानसिक समस्या हो सकती है। कोई इंसान ऐसा तभी करता है जब वह हकीकत से भागना चाहता हो। तीसरे ने मजाकिया लहजे में लिखा-क्या यह किसी द सिम्पसंस के एपिसोड जैसा नहीं लगता? मेरा बॉयफ्रेंड मुझे छोड़कर मेरे रोबोट वर्जन के साथ चला गया।

अल-नसला रॉक दुनिया के वैज्ञानिकों के लिए बनी रहस्य

हजारों सालों से सीधी, रेज़र जैसी धार की तरह दो हिस्सों में बंटी है चट्टान

निज संवाददाता : सऊदी अरब के तायमा ओएसिस में खड़ा एक रहस्यमय पत्थर दुनिया भर के लोगों को हैरान करता है। इसे अल-नसला रॉक कहा जाता है और इसकी उम्र करीब 4,000 साल आंकी गई है। देखने में यह साधारण-सा है, लेकिन असली चौंकाने वाली बात यह है कि यह पत्थर बीच से एकदम सीधी, रेज़र जैसी धार वाली रेखा में दो बराबर हिस्सों में बंटा हुआ है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक यह कट इतनी परफेक्ट है कि मानो किसी विशालकाय लेज़र से इसे काटा गया हो, लेकिन 4 हज़ार साल पहले कोई लेज़र या आधुनिक मशीन तो थी नहीं यह कुदरत का करिश्मा ही है।

वैज्ञानिक आज तक पूरी तरह नहीं समझ पाए हैं कि यह विभाजन किस तरह हुआ। कुछ मानते हैं कि यह प्राकृतिक भूगर्भीय ताकतों और दरारों का नतीजा हो सकता है, जबकि कुछ कहते हैं कि हवा और रेत के कटाव ने हज़ारों साल में यह अद्भुत आकार गढ़ा है। जो भी वजह रही हो, सच यह है कि अल-नसला रॉक अब भी रहस्य की तरह रेगिस्तान की रेत पर खड़ा है। यह हमें याद दिलाता है कि प्रकृति कभी-कभी इतनी सटीक इंजीनियरिंग दिखा देती है कि हमारी सबसे आधुनिक तकनीक भी कल्पना जैसी लगती है। अल-नसला रॉक सऊदी अरब के तैमा क्षेत्र में स्थित एक रहस्यमयी चट्टान है, जो बीच से बिल्कुल सीधे दो भागों में बंटी हुई है, और यह हजारों सालों से छोटे स्तंभों पर टिकी है। यह अविश्वसनीय विभाजन प्राकृतिक अपरदन, रासायनिक अपक्षय और संभवतः प्राचीन भूवैज्ञानिक घटनाओं, जैसे तीव्र हवाएं और भूकंप, के कारण हुआ है, जो चट्टान के नाजुक संतुलन और समरूप विभाजन को समझाते हैं। अल-नसला रॉक एक विशाल बलुआ पत्थर की संरचना है जो बीच में इतनी सटीक रूप से दो हिस्सों में बंटी है कि यह किसी आधुनिक लेज़र से काटी हुई लगती है। दोनों खंड पतली, प्राकृतिक आधारशिलाओं पर टिके हैं, जिससे यह हवा में तैरती हुई नजर आती है। यह चट्टान प्राकृतिक शक्तियों का एक अद्भुत परिणाम है। लाखों सालों के हवा के कटाव और रासायनिक अपक्षय ने इस विभाजन को संभव बनाया है, जिससे यह भूवैज्ञानिक आश्चर्य बन गई है। चट्टान की सतह पर प्राचीन नक्काशी या पेट्रोग्लिफ भी देखे जाते हैं, जिनमें अरबी घोड़ों, आइबेक्स और मनुष्यों के चित्र शामिल हैं। यह चट्टान भूवैज्ञानिकों के लिए अत्यधिक रुचि का विषय है। भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण तकनीकें और 3डी इमेजिंग का इस्तेमाल इसके निर्माण के कारणों और आसपास के क्षेत्र के इतिहास को बेहतर ढंग से समझने के लिए किया जा रहा है। यह चट्टान सऊदी अरब के उत्तरी-पश्चिमी रेगिस्तान में स्थित है, जो तैमा नखलिस्तान से करीब 50 किलोमीटर दक्षिण में मौजूद है।

बगैर आंसू बहाए 'चिली मैन' खा जाता है 10 किलो सूखी मिर्च

निज संवाददाता : मेघालय का 50 साल के एक किसान बगैर आंसू बहाए 10 किलो सूखी मिर्च खा जाता है। किसान की इस अजीबो-गरीब हरकत से हैरान लोग अब 'चिली मैन' कहने लगे हैं। पूर्वी जयंतिया हिल्स जिले के बटाव गांव का राम पिरतुह की यह खासियत पहली बार 2021 में सामने आई थी जब उनका एक वीडियो फेसबुक और यूट्यूब पर वायरल हुआ। वीडियो में उन्हें मिर्च की थैलियां खाते देखा गया। देखते ही देखते यह वीडियो लाखों व्यूज तक पहुंच गया और लोग दूर-दूर से इस शख्स की हकीकत जानने आने लगे। राम का कहना है कि मिर्च उनके जीवन का हिस्सा है। बचपन से ही वे लगातार मिर्च खाते आ रहे हैं और अब उन्हें इसका तीखापन महसूस ही नहीं होता। यही नहीं, वे मिर्च से नहाने और उसे अपने शरीर पर लगाने से भी नहीं कतराते। उनकी लोकप्रियता बढ़ने के बाद कई लोगों ने उन्हें परखने के लिए कठिन चैलेंज दिए। एक शो में तो उन्हें मिर्च के पेस्ट से नहला दिया गया और यहां तक कि उनके प्राइवेट पार्ट्स में भी मिर्च लपेटी गई। आश्चर्य की बात यह रही कि इतनी तीव्रता के बावजूद उन्हें कोई तकलीफ नहीं हुई। गांव के लोग बताते हैं कि उनका हर भोजन मिर्च पर आधारित होता है चाहे चावल हो, सब्जी हो या मांस। सुबह उठते ही वे मिर्च वाली चाय पीते हैं, दोपहर में मिर्च-मटन करी और शाम को कच्ची मिर्च का सेवन करते हैं। राम खुद कहते हैं मिर्च मेरी दवा है, मुझे कभी कोई बीमारी नहीं लगती। मेघालय के जयंतिया हिल्स में मिर्च की खेती आम है, लेकिन राम जैसी आदत और सहनशक्ति किसी और में नहीं है। विशेषज्ञ मानते हैं कि लगातार और बड़े पैमाने पर मिर्च का सेवन किसी भी व्यक्ति के लिए खतरनाक हो सकता है, लेकिन राम के शरीर ने इसे असाधारण तरीके से स्वीकार कर लिया है। आज जब स्वास्थ्य जगत हेल्दी डाइट और नई थैरेपी की चर्चा में उलझा हुआ है, तब राम पिरतुह का पुराना वीडियो एक बार फिर वायरल हो गया है।

फुटबॉल जगत में अफ्रीकी क्रांति

घाना के बाद युवा विश्वकप जीतने वाला दूसरा अफ्रीकी देश बना मोरक्को

शुभ्रांशु राय

मोरक्को ने फुटबॉल जगत को चौंका दिया। शक्तिशाली अर्जेंटीना को हराकर उत्तरी अफ्रीका का यह देश पहली बार अंडर-20 विश्वकप चैंपियन बन गया। बीते सोमवार 20 अक्टूबर को तड़के सैंटियागो के एस्तादियो नैसियोनाल स्टेडियम में खेले गए इस मैच में मोरक्को ने अर्जेंटीना को 20 से हराकर इतिहास रच दिया।सातवीं बार खिताब जीतने के लक्ष्य के साथ उतरी थी अर्जेंटीना। पूरे टूर्नामेंट में उन्होंने बेहतरीन फुटबॉल खेला। लेकिन फाइनल में आकर वे मोरक्को के दृढ़ जज़्बे के आगे हार मान गए।

फाइनल की यह हार इस युवा विश्वकप में अर्जेंटीना की पहली हार रही।फाइनल में नायक बने यासिर ज़ाबिरी ने दो गोल दागे। मैच की शुरुआत के महज 12वें मिनट में पुर्तगाल की शीर्ष लीग क्लब एफसी फ़ामालिकाओ के लिए खेलने वाले यासिर ज़ाबिरी के गोल से मोरक्को ने बढ़त बना ली। 29वें मिनट में उन्होंने एक और गोल किया। इसके बाद भरसक प्रयासों के बाद भी ला अल्बिसेलेस्ते गोल नहीं कर सके। अंततः मैच का परिणाम मोरक्को के पक्ष में 20 रहा।दो गोल से पीछे होने के बावजूद अर्जेंटीना ने हार नहीं मानी। उन्होंने प्रतिद्वंदी के बॉक्स में लगातार हमले किए।

पूरे मैच में 76 प्रतिशत बॉल पज़ेशन अर्जेंटीना के पास था। गोल की दिशा में उन्होंने 20 शॉट लिए। लेकिन फुटबॉल में गोल ही असली बात हैइसका एक बार फिर प्रमाण मिल गया। यहां मोरक्को के गोलकीपर गोमिस की विशेष रूप से तारीफ़ करनी होगी, जो अजेय साबित हुए।अर्जेंटीना की हार के बावजूद मेसी ने युवा टीम को प्रोत्साहन का संदेश दिया। सोशल मीडिया स्टोरी में उन्होंने लिखा-पूरे टूर्नामेंट में तुम लोगों ने शानदार खेल दिखाया। हम सब चाहते थे कि ट्रॉफी तुम्हारे हाथों में हो।

तुमने जो खुशी दी है, वह गर्व की बात है। तुमने हमारे दिल जीत लिए। उल्लेखनीय है कि इससे पहले 2005 के विश्वकप में मोरक्को की युवा टीम ने चौथा स्थान प्राप्त किया था। वहीं 2009 में घाना के बाद मोरक्को अंडर-20 विश्वकप जीतने वाला दूसरा अफ्रीकी देश बन गया।

15 साल की लड़की बनी 450 किमी 'टूर डी बंगाल' की बेस्ट फीमेल राइडर

निज संवाददाता : एक 15 साल की लड़की जिसे उसके बड़े भाई ने बिना माता-पिता के सपोर्ट के पाला-पोसा, 'टूर डी बंगाल' में बेस्ट फीमेल राइडर बनकर उभरी है। यह 450 किमी की साइकिल रेस है जो दुनिया के सबसे मशहूर साइकिलिंग इवेंट 'टूर डी फ्रांस' से प्रेरित है।प्रतियोगिता में सबसे कम उम्र की राइडर्स में से एक, मंजू शाह, फ्यूचर होप की टीम का हिस्सा थीं। यह एक एनजीओ है जो बालीगंज के रोलैंड रो पर सड़क पर रहने वाले बच्चों के लिए एक स्कूल चलाता है और खेल को सशक्तिकरण के एक टूल के तौर पर प्रमोट करता है। ज़्यादातर पार्टिसिपेंट्स 25 साल से ज़्यादा उम्र के थे, जिससे मंजू का प्रदर्शन और भी शानदार हो गया। उनकी टीम कुल मिलाकर तीसरे नंबर पर रही।तीन दिन की रेस का दूसरा एडिशन बीते 10 अक्टूबर को हावड़ा के सलप से शुरू हुआ और इसमें बंगाल के कई जिले शामिल हुए। स्टेज 1 में राइडर्स हावड़ा से बांकुड़ा के बिष्णुपुर तक गए, जो 167.5 किमी की दूरी थी। अगला लेग 11 अक्टूबर को बिष्णुपुर से झाड़ग्राम तक 111.4 किमी का था। आखिरी दिन, 12 अक्टूबर को,

पार्टिसिपेंट्स ने झाड़ग्राम से हावड़ा के डानकुनी तक 172 किमी साइकिल चलाई, जहां एक होटल में रेस खत्म हुई। राइडर्स ने जीपीएस वाले रूट मैप से रास्ता तय किया।रेस में 18 टीमें थीं, हर टीम में तीन मेंबर थे। प्रतिभागियों ने नेशनल हाईवे, गांव की सड़कों, जंगल के इलाकों और हाथी कॉरिडोर पर साइकिल चलाई। ऐसे इलाके जहां स्टैमिना और स्किल दोनों का टेस्ट हुआ। ज़्यादातर टीमों के साथ एक सपोर्ट कार थी। आयोजकों में से एक, अर्नब पात्रा ने कहा-प्रतिभागी हर दिन सुबह 5 बजे शुरू करते थे। जबकि प्रोफेशनल्स को पांच से छह घंटे में रेस खत्म करनी पड़ती थी, एमेच्योर्स को 12 घंटे तक लगते थे।मंजू, फ्यूचर होप स्कूल की छात्रा हैं। वे पिकनिक गार्डन में अपने बड़े भाई सनी के साथ रहती हैं, जो एक लंबी दूरी के साइकिलिस्ट हैं और एक छोटी साइकिल-रिपेयर की दुकान चलाते हैं। सनी ने ही उन्हें इस खेल से परिचय कराया था। फ्यूचर होप में स्पोर्ट्स डायरेक्टर पॉल वॉल्श ने कहा-मंजू की ज़िंदगी बहुत मुश्किल रही है। उसे उसके भाई ने पाला है, जो उसकी देखभाल करता है। वह बहुत मज़बूत है और पहले ही नेशनल लेवल की रेस में हिस्सा ले चुकी है।मंजू की टीम में 18 साल के सागर राम और 16 साल के विक्की राम शामिल थे, दोनों खिदिरपुर से हैं और फ्यूचर होप की साइकिलिंग वर्कशॉप का हिस्सा हैं। वॉल्श ने कहा-दोनों बहुत होनहार साइकिलिस्ट हैं।फ़िनिश लाइन से लगभग 120 किमी दूर, फ़ाइनल लेग के दौरान, मंजू एक मोड़ चूक गईं और 5 किमी का चक्कर लगा लिया। उन्होंने बताया-मैंने लगभग हार मान ली थी। लेकिन पॉल सर और दूसरे लोग मुझे हिम्मत देते रहे। मेरी सफलता का क्रेडिट उन्हीं को जाता है। वॉल्श पूरी रेस के दौरान एक सपोर्ट कार में टीम के पीछे चल रही थीं।वॉल्श ने कहा-यह एक अनोखा खेल का नज़ारा है। ज़्यादातर पार्टिसिपेंट प्रोफ़ेशनल लंबी दूरी के साइकिलिस्ट हैं। उनके साथ मुकाबला करना और बेहतर करना एक बड़ी कामयाबी है।फ़्यूचर होप की सीईओ सुजाता सेन ने कहा-मुझे मंजू और टीम पर बहुत गर्व है। उन्होंने न सिर्फ़ साइकिलिंग में, बल्कि ज़िंदगी में भी ज़बरदस्त उम्मीद दिखाई है। फ़ाइनल स्टैंडिंग में, डीक्रेस्ट्स तुंगा रेजिमेंट ने पहला स्थान हासिल किया। उसके बाद ओल्ड बोन्स दूसरे स्थान पर रहीं।

मैदान पर लौटी अफ़गान महिला फुटबॉल टीम

निज संवाददाता

अफ़गानिस्तान की रिफ्यूजी महिला फुटबॉल टीम ने मोरक्को में फीफा (अंतर्राष्ट्रीय एसोसिएशन फुटबॉल महासंघ) द्वारा होस्ट किए गए चार-टीम के फ्रेंडली टूर्नामेंट में अपना पहला मैच खेला। हालांकि वे रविवार (26 अक्टूबर) को चाड से 6-1 से हार गए, लेकिन यह मैच खिलाड़ियों के लिए एक बड़ी जीत थी। अपने देश में खेलने पर बैन लगने के बाद यह उनका पहला इंटरनेशनल मैच था।2021 में तालिबान सरकार के सत्ता में आने के बाद अफ़गानिस्तान में महिला खेलों पर बैन लगा दिया गया था, जिससे खिलाड़ियों को उत्पीड़न के डर से देश छोड़ना पड़ा। तालिबान के सत्ता में आने से पहले अफ़गानिस्तान में 25 कॉन्ट्रैक्टेड महिला खिलाड़ी थीं, जिनमें से ज़्यादातर अब ऑस्ट्रेलिया में रहती हैं।अफ़गान महिला नेशनल टीम ने आखिरी बार 2021 में इंटरनेशनल मैच खेला था। इस साल मई में, वर्ल्ड फुटबॉल की गवर्निंग बॉडी (फीफा) ने एक अफ़गान महिला रिफ्यूजी टीम बनाने को मंज़ूरी दी और पॉलीन हैमिल को कोच बनाया गया। फीफा के साथ बातचीत के बाद टीम ने ऑफिशियल नाम अफ़गान महिला यूनाइटेड चुना। मैच से पहले टीम की कैप्टन फातिमा हैदरी ने कहा-महिलाओं के तौर पर इतनी मेहनत करने के बाद हम यही मांग रही थीं कि हमें वह मिले जिसकी हम हकदार हैं। खेलने का हमारा हक और अपने देश को रिप्रेजेंट करने का हमारा हक।रविवार को, मेलबर्न के स्ट्राइकर मनोज नूर ने पेनल्टी पर गोल करके अफगान विमेन यूनाइटेड को बढ़त दिलाई। हालांकि, चाड ने जल्दी ही वापसी करते हुए 6-1 से जीत हासिल कर ली।

सिर्फ 22 महीने की उम्र में श्रेयांश का कमाल, आसानी से पहचान सकता है 10 यूरोपियन देशों के झंडे

निज संवाददाता : बेहला के सरशुना इलाके में रहने वाला श्रेयांश सिर्फ़ 22 महीने की उम्र में दस यूरोपियन देशों के झंडे आसानी से पहचान सकता है। वह तस्वीरें देखकर बता सकता है कि कौन डेंटिस्ट है और कौन एस्ट्रोनॉट। वह सिर्फ़ उनके कपड़े देखकर बता सकता है कि कौन फ़्लाइट अटेंडेंट है और कौन सिक्योरिटी गार्ड। बस इतना ही। दुनिया का सातवां अजूबा तो उसके ज़बान पर है। वह कह सकता है-यह ब्राज़ील में क्राइस्ट द रिडीमर है। यह चीन की महान दीवार है। यह पेरू में माचू पिच्चू है। यह सब कुछ सेकंड में होता है। इतनी कम

उम्र में उसमें इतना टैलेंट कैसे हो सकता है? डॉक्टर कहते हैं कि हर किसी का दिमाग एक जैसा काम नहीं करता। जेनेटिक या हेरेडिटरी वजहों से, कई लोगों में कम उम्र में ही मेमोरी को एनालाइज़ करने की ज़्यादा क्षमता होती है। जिनके दिमाग में न्यूरॉन्स के बीच तेज़ कनेक्शन होते हैं, उनमें दूसरों की तुलना में जानकारी को समझने और एनालाइज़ करने की क्षमता थोड़ी ज़्यादा होती है। क्या श्रेयांश के साथ भी ऐसा ही है?श्रेयांश की मां एसएसकेएम में नर्सिंग ऑफिसर हैं। अपने बेटे की इस खास क्षमता के बारे में उन्होंने कहा-वह बचपन से ही जो कुछ भी देखता है उसे याद रखता है। अगर वह एक बार कोई फूल, फल या जानवर देख लेता है, तो वह उसके दिमाग में बस जाता है। बाद में, अगर आप उसे तस्वीर दिखाकर उस फूल या फल का नाम पूछते हैं, तो वह उसे तुरंत पहचान लेता है। जबकि कई लोग साढ़े तीन साल पर एबीसीडी बोलने पर भी रुक जाते हैं। 22 महीने का श्रेयांश बड़बड़ा रहा है कि क्यू कौन सा है और एम कौन सा है।

मनोरंजन

सोनम बाजवा ने साड़ी लुक में ढाया कहर

फोटोज देख दीवाने हुए फैंस

निज संवाददाता : सोनम बाजवा एक बार फिर अपने स्टाइलिश लुक को लेकर चर्चा में हैं। एक्ट्रेस ने हाल ही में साड़ी में अपनी कुछ लेटेस्ट तस्वीरें शेयर की हैं, जिन्हें देखकर फैंस उनके दीवाने हो गए हैं। सोनम ने अपने इस लुक से सोशल मीडिया पर कहर ढा दिया है और हर कोई उनकी तारीफ करते नहीं थक रहा। एक्ट्रेस सोनम बाजवा इन दिनों अपनी हाल ही में रिलीज हुई फिल्म एक दीवाने की दीवानियत को लेकर सुर्खियों में हैं। इसी दौरान एक्ट्रेस ने अपनी कुछ खूबसूरत तस्वीरें अपने इंस्टाग्राम पर पोस्ट की हैं। जहां उनका देसी अंदाज साफ झलक रहा है।एक्ट्रेस के लुक की बात करें तो उन्होंने व्हाइट कलर की साड़ी पहनी है। जिसे उन्होंने मैचिंग वर्क वाले ब्लाउस के साथ कैरी किया है।

रणवीर सिंह और दीपिका पादुकोण ने जारी की बेटी दुआ की तस्वीर

निज संवाददाता : बॉलीवुड के पावर कपल रणवीर सिंह और दीपिका पादुकोण हमेशा सुर्खियों में बने रहते हैं। बीते साल ही ये कपल पेरेंट्स बने हैं। मां बनने के बाद से दीपिका बेटी दुआ के साथ बिजी रहती हैं। रणवीर और दीपिका अभी तक बेटी का चेहरा सभी से छुपाते नजर आते थे। मगर दिवाली के खास मौके पर इस कपल ने अपनी बेटी दुआ का चेहरा रिवील कर दिया है. दुआ की मम्मी-पापा के साथ फोटोज देखकर लोग इसे एआई जनरेटिड कह रहे हैं।दीपिका पादुकोण ने पिछले साल सितंबर में दुआ को जन्म दिया था।

वेश्या का 'अमृत'

प्रकाश पाण्डेय

कोलकाता की बदनाम गली, सोनागाछी। रात के सन्नाटे में जब पूरा शहर नींद में डूब जाता, तब यहां की बत्तियां जगमगा उठतीं। इन बत्तियों की रोशनी में उजाला नहीं, बल्कि समाज का सबसे गहरा अंधकार छिपा है। हर खिड़की के पीछे कोई चीख, कोई हंसी, कोई सौदा जन्म लेता और मर जाता... इन्हीं अंधेरों के बीच एक कोठे पर लावंती भी रहती थी। उसकी कहानी कोई जानता नहीं था और शायद जानना भी नहीं चाहता...लावंती का अतीतकभी वह किसी गरीब बस्ती की मासूम लड़की थी। पिता दुलारे बांकुड़ा की सड़कों पर रिक्शा चलाते थे और मां वैदेही बीमार बिस्तर पर पड़ी रहती थी। अधिक शराब पीने और दिनभर बिना खाए रिक्शा चलाने से दिन-प्रतिदिन सेहत गिरती चली गई। आखिरकार एक दिन दुलारे ने दम तोड़ दिया।पिता की मौत के बाद मासूम लावंती और बीमार मां वैदेही को इलाके के सूदखोर परेशान करने लगे। आए दिन कर्ज की लंबी सूची लेकर घर पर धमक आते और मां-बेटी से दुलारे को दिए कर्ज के पैसे मांगते...इसी बीच दुलारे का साथी बुरहान मददगार बनकर उनके घर पहुंचा। उसने लावंती को कोलकाता में नौकरी दिलाने का वादा किया और वैदेही को दवा और खाने पीने के नाम पर कुछ नकद दे दिए। अगली सुबह वह लावंती को अपने साथ लेकर कोलकाता पहुंचा। उसने लावंती को नौकरी के नाम पर सोनागाछी के कोठे पर बैठा दिया।जिस दिन लावंती कोठे की कोठरी में बंद हुई, उसी दिन उसकी दुनिया सिमट गई। पहले वह हर रात रोती थी, लेकिन आहिस्ते-आहिस्ते आंखों से आंसू सूख गए और चुप्पी उसकी भाषा बन गई। चेहरे पर मुस्कान का नकाब चिपक गया, पर दिल के किसी कोने में अब भी एक सपना पलता रहा। कभी किसी अपने को गले लगाने का और वह भी बिना किसी सौदे के।एक रात, जब बाहर तूफान तेज था, तभी अचानक पुलिस का छापा पड़ा। हर तरफ अफरा-तफरी, चीखें और भगदड़... उसी अंधेरे में लावंती को एक सिसकी सुनाई दी। कूड़े के ढेर में एक बच्चा तड़प रहा था। वह दौड़ी और उसे उठाया, अपनी साड़ी में लपेटा और सीने से लगा लिया। इस दौरान लावंती के मुंह से निकला, ''अब तू मेरा है।'' बच्चे का नाम रखा अमृत...उसके बाद अमृत लावंती की जिंदगी का एक मात्र उजाला बन गया।कोठे की औरतें जब उसे देखतीं, तो उनके चेहरों पर भी एक अजीब सी कोमलता आ जाती, लेकिन बाहर की दुनिया के लिए अमृत '' वेश्या पुत्र'' था। एक कलंक...देखते ही देखते अमृत पांच साल का हो गया। इस बीच जब लावंती ने उसे स्कूल भेजने की कोशिश की, तो हर दरवाजे से एक ही जवाब मिला, ''हमारे स्कूल में ऐसे बच्चों के लिए जगह नहीं है।'' आखिरकार हारकर उसने खुद उसे पढ़ाना शुरू किया। पुराने अखबारों से अक्षर सिखाए। पड़ोस की कबाड़ दुकान से पुरानी किताब खरीद लाती और उसे पढ़कर अमृत को सुनाती।रात में जब बाकी औरतें नाच रही होतीं, तब लावंती अपने बेटे से बाते करती। उससे कहती, ''बेटा, तू यहां का नहीं है। तू उन लोगों का है, जो दुनिया को बेहतर बना सकते हैं।''धीरे-धीरे अमृत बड़ा हुआ। वह जानता था कि उसकी मां कौन है और क्या करती है, लेकिन उसने कभी शर्म महसूस नहीं की। एक दिन उसने कहा, ''मां, तुमने ही मुझे यह जिंदगी दी है। मैं तुम्हारा कर्ज कभी नहीं उतार पाऊंगा।''इसी दौरान एक एनजीओ की महिला बासंती सोनागाछी आई, उन बच्चों की पढ़ाई के लिए जो अंधेरी दुनिया से थे। उसने अमृत की आंखों में कुछ अलग चमक देखी।बासंती की मदद से अमृत को स्कूल में दाखिला ही नहीं, बल्कि छात्रवृत्ति भी मिलनी शुरू हो गई। फिर कॉलेज और उसके बाद यूनिवर्सिटी। इस क्रम में लावंती हर महीने अपनी कमाई का थोड़ा हिस्सा छिपाकर उसे भेजती रही। उसे खुद भूख सहनी पड़ी, लेकिन बेटे को किताबें समय पर भिजवा देती।अमृत ने समाजशास्त्र में डिग्री ली, फिर सामाजिक कार्य में भी स्नातक किया। उसे महसूस हुआ कि उसकी मां जैसी हजारों औरतें अब भी उसी अंधेरे में कैद हैं। ऐसे में उसने प्रण लिया कि मैं इन औरतों और उनके बच्चों को सम्मान दिलाऊंगा।''अमृत ने नई सुबह नाम की संस्था शुरू की। उसने सरकार से, समाज से, उन मानसिक दीवारों से लड़ाई लड़ी जो इन औरतों और उनके बच्चों को हाशिए पर रखते थे। उसने ऐसे स्कूल खोले, जहां बच्चे अपने नाम से पहचाने जाएं, न कि अपनी मां के पेशे से...जल्द ही मीडिया ने उसकी कहानी दुनिया के सामने रखी, जो सुर्खियां बन गई। ''वेश्या पुत्र बना नायक।'' अमृत कहता रहा, ''मैं कोई नायक नहीं, बस एक बेटे की जिम्मेदारी निभा रहा हूं।'' हालांकि जब वह राष्ट्रीय पुरस्कार ले रहा था, तब लावंती ने टीवी पर पहली बार उसे देखा। उसकी आंखों में आंसू थे, लेकिन इस बार वे आंसू दर्द के नहीं, गर्व के थे। अमृत जब सोनागाछी लौटा तो लावंती ने उसका माथा चूमा और कहा, ''बेटा, अब लोग तुझे मेरे नाम से नहीं, मैं तुझसे पहचानी जाऊंगी।'' अमृत ने उसकी हथेलियां थाम लीं, ''मां, तूने मुझे जन्म नहीं दिया, पर तूने मुझे इंसान बनाया है।''कुछ साल बाद लावंती की तबीयत बिगड़ गई। अस्पताल के बिस्तर पर आखिरी सांस लेते हुए उसने कहा, ''बेटा, अगर कभी कोई तुझसे तेरी पहचान पूछे, तो कहना...मैं उस औरत का बेटा हूं, जिसने समाज से ज्यादा इंसानियत को जिया।''कुछ दिनों बाद लावंती चली गई, उस दुनिया से, जिसने उसे कभी नहीं अपनाया। अब ''नई सुबह'' के हर स्कूल में उसकी तस्वीर लगी है।अमृत मंच पर खड़ा होकर कहता है, ''जिस समाज ने मेरी मां जैसी औरतों को नीचा समझा, उसी समाज में आज उनके बेटे देश का सम्मान बढ़ा रहे हैं। अगर हम किसी को जन्म से नहीं, कर्म से परखें, तो हर कोठे से एक अमृत जन्म लेता है।''

कहानी

स्वामी मोहता पब्लिशिंग हाउस के लिए, प्रकाशक, मुद्रक : अजय कुमार मोहता द्वारा अरिहंत मुद्रा, 61, सूर्यसेन स्ट्रीट, कोलकाता-700009 से मुद्रित एवं प्रकाशित। **संपादकीय कार्यालय** : 10, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सरणी, (क्लाइब रो), 5बी मंजिल, रूम नं. 9, कोलकाता-700001, **स्थानीय कार्यालय** : 28-5 कन्वेंट रोड, मौलाली, कोलकाता-700014। **संपादक : अजय कुमार मोहता**, मो. 9830045693, E-mail-gambheersamachar@gmail.com. Website. www.gambheersamachar.in (प्रकाशित रचनाओं के चयन, संपादन हेतु पीआरबी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी, सभी कानूनी विवाद के लिए कोलकाता न्याय क्षेत्र)